

मई, 2024

उत्तर प्रदेश के सहकारी आन्दोलन का दर्पण

मूल्य : 15.00

सहकारिता

हिन्दी मासिक पत्रिका



तुलसी का पौधा
पृष्ठ 17 | - रामफेर



नाखिल पानी में छिपा है स्वास्थ्य का खजाना
पृष्ठ 21 | - श्रीमती दीप माला सिंह



पृष्ठ 8 | नानी का गांव
- अयोध्या प्रसाद



पृष्ठ 24 | शहद और स्वास्थ्य
- श्रीमती कुसुम सिंह



पृष्ठ 27 | सनातन संस्कृति की अनुपम देन
अग्निहोत्र कृषि
- अखिलेश सिंह चन्देल



पृष्ठ 34 | पर्यावरण दिवस की सार्थकता
- श्रीमती नमिता वैश्य



पृष्ठ 37 | घर-घर सहकारिता
घर-घर सहभागिता
- सीएमए गोविन्द शुक्ल

x lœi nsk, oans&fonskr d d hl gd kj hx fr fof/k, kd ht kud kj hgsq <8

“सहकारिता”

(हिन्दी मासिक पत्रिका)



I gd kj r kj I ekt okn] d f'ki pk r hj kt , oa
x leh.kfu; ks u d kKku ni Zk

“सहकारिता”

(हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र)



I gd kj hx fr fof/k, kd ht kud kj hgsq
सहकारिता पढ़िये, सहकारिता से जुड़िये

सहकारिता



वर्ष-61 अंक-11 मई, 2024

संरक्षक

अनिल कुमार (आई.ए.एस.)
आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ०प्र०

श्रीकान्त गोस्वामी
प्रबन्ध निदेशक/प्रधान सम्पादक

सवीन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (प्रशा०, शिक्षा)

सुनील कुमार दिवाकर
प्रभारी सम्पादक

पवन कुमार वर्मा
आवरण एवं लेजर टाइप/प्रूफ रीडर

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति : 15.00 रुपये
वार्षिक (बारह अंक) : 150.00 रुपये (डाक से)
आजीवन : 1500.00 रुपये
सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत या बैंक ड्राफ्ट/चेक द्वारा सम्पादक "सहकारिता" यू०पी० कोआपरेटिव यूनियन लि०, 14, डा० भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०) के पते पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

यू०पी० कोआपरेटिव यूनियन लि० 14, डा० भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०) 226 001.
फोन नं०: 0522-4004577 मो० नं० : 9415094114
ई-मेल : sahkarita@gmail.com,

स्वत्वाधिकारी यू०पी० कोआपरेटिव यूनियन लि०, प्रकाशक, मुद्रक, सुनील कुमार दिवाकर द्वारा सहकारी प्रेस 14, डा० भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रभारी सम्पादक - सुनील कुमार दिवाकर।

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इसमें सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ०सं०
1.	सम्पादकीय	4
2.	महान कृषि वैज्ञानिक डा. बेजामिन पियरी पाल	5
	- गोरी शंकर वैश्य "विनम्र"	
3.	श्रमिक दिवस पर	7
	- दयानन्द जड़िया 'अबोध'	
4.	नानी का गांव	8
	- अयोध्या प्रसाद	
5.	परमाणु ऊर्जा : स्थायी ऊर्जा भविष्य की ओर	10
	- डा० दीपक कोहली	
6.	"सहकारिता विभाग"	12
	- सारंग त्रिपाठी	
7.	गिल्लू बहुत सताती है	13
	- श्रीमती किरन कान्ती	
8.	हमारे विकासोन्मुख गाँव	14
	- डा० ओ.पी. मिश्र	
9.	तुलसी का पौधा	17
	- रामफेर	
10.	किसान	20
	- बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'	
11.	नारियल पानी में छिपा है स्वास्थ्य का खजाना	21
	-श्रीमती दीप माला सिंह	
12.	जरूर करिहा मतदान	23
	- हरी राम यादव फैजाबादी	
13.	शहद और स्वास्थ्य	24
	- श्रीमती कुसुम सिंह	
14.	बेटी	26
	- सतीश 'बब्बा'	
15.	सनातन संस्कृति की अनुपम देन अग्निहोत्र कृषि	27
	- अखिलेश सिंह चन्देल	
16.	गरीब घर की लड़कियाँ	30
	- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	
17.	धूप का चश्मा	31
	- चन्द्रकान्ता शर्मा	
18.	इष्ट का सहारा	33
	- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	
19.	पर्यावरण दिवस की सार्थकता	34
	-श्रीमती नमिता वैश्य (शिक्षिका)	
20.	धरती ठहरी	36
	- डॉ अलका अस्थाना 'अमृतमयी'	
21.	घर-घर सहकारिता, घर घर सहभागिता	37
	- सीएमए गोविन्द शुक्ल	
22.	भारतीय राजनीति में नेतृत्व का संकट	40
	- बृजपाल	
23.	'आइये-आइये नमस्कार'	42
	- उमेश शुक्ल	

□□□

सहकारी बन्धुओं व पाठकों से अपील

समस्त पाठकों, सहकारी जगत से जुड़े सरकारी व संस्थागत अधिकारी, कर्मचारी तथा सहकारी बन्धुओं से अनुरोध है कि आप अपने जीवन से जुड़ी कोई विशेष उपलब्धि/उत्कृष्ट कार्य हेतु संतुलित व्याख्या, सुझाव व विचार "सहकारिता" मासिक पत्रिका, यू०पी० कोआपरेटिव यूनियन लि०, 14, डा० भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ०प्र०) पर भेज सकते हैं, या फिर ई-मेल sahkarita@gmail.com पर कर सकते हैं। आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

- प्रभारी सम्पादक



सुनील कुमार दिवाकर



सम्पादक की कलम से

सहकारिता औद्योगिक साहस का एक विशिष्ट रूप है। इसके केवल लाभ को ही ध्यान में रखकर विनियोग नहीं होता है वरन् विनियोग का आधार सामाजिक आवश्यकता और सामाजिक समृद्धि होती है। यह एक सामूहिक साहसीय प्रक्रिया है जिसमें निर्बल वर्ग भी सहयोग देता है और इसके प्रति अपनी श्रद्धा की भावना रखता है। सहकारी अर्थव्यवस्था पूंजीवाद की बुराइयों को त्यागकर उसकी अच्छाइयों को ग्रहण कर धीरे-धीरे सहकारी समाजवादी की ओर चलती है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में केवल पूंजीपतियों के लिए ही लाभ का निर्माण होता है। इसमें औद्योगिक उत्पादन क्रिया समस्त समाज के हित के लिए नहीं वरन् पूंजीपति के आर्थिक लाभ के लिए की जाती है। इस प्रकार यदि इस पूंजीवादी व्यवस्था पर नियन्त्रण नहीं किया गया तो कुछ धन की निर्धनता और धनी के वैभव में वृद्धि करके सम्पत्ति एवं अधिकार को कुछ हाथों में ही केन्द्रित कर देती है। इस दोषों का निराकरण करने में सहकारिता समाजवाद से कहीं अधिक आगे है, क्योंकि सहकारिता आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में सामाजिक हित, न्यायपूर्ण विचार व सामाजिक बन्धुत्व की भावना को ध्यान में रखती है। उत्पादन सब मिलकर अथवा सहकारिता के आधार पर करते हैं, परन्तु इजराइल जैसे कुछ देशों में उपभोग भी सामूहिक रूप से होता है, जो कि आदर्श स्थिति है।

कृषि प्रधान देशों की आर्थिक प्रगति के लिए सहकारिता एक साधन है। कृषि प्रधान देश विशेषकर अल्प विकसित देशों की कृषि उत्पादिता अत्यन्त कम है। अल्प विकसित देशों में कृषि पर जनसंख्या का भार अधिक है। कृषक आधे वर्ष तक बेकार रहते हैं। जोतें अत्यन्त छोटी हैं। इसमें प्राचीन परम्परावादी औजारों, बीजों, उर्वरकों का प्रयोग होता है। उत्पादन का अधिकांश भाग मध्यस्थों के हाथों में ही केन्द्रित हो जाता है। कुटीर उद्योगों का प्रचलन नाममात्र का होता है। कृषि विकास में सहकारिता अत्यधिक सराहनीय भूमिका अदा करती है। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि सहकारिता कृषि विकास की एक प्रविधि है। छोटे-छोटे खेतों में सहकारी कृषि व्यवस्था द्वारा उत्पादन बढ़ाया जा सकता है व किसानों को सहकारी संस्थाओं द्वारा पर्याप्त मात्रा में साख प्रदान की जा सकती है। सहकारिता के आधार पर नवीन मशीनों और औजारों को खरीद कर कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। विपणन में होने वाली समस्त बुराइयों को दूर किया जा सकता है तथा इस प्रकार सहकारिता कृषि प्रधान देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में समर्थ है। कृषि उत्पादन क्षेत्र में प्रगति के लिए साधन रूप में सहकारिता के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है, मुख्य रूप से उन देशों में जो अभी आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं पुनः कृषि प्रधान देशों में कृषक लगभग 6 महीने बेकार बने रहते हैं। सहकारिता द्वारा कुटीर उद्योगों को संगठित किया जा सकता है और इन उद्योगों द्वारा बेकारी कम की जा सकती है, उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय साधन के योगदान को आर्थिक विकास के पथ में कुछ इस प्रकार के रोड़े होते हैं, जिन्हें कानून द्वारा नहीं हटाया जा सकता है। उनके लिए सहकारिता सहायक होती है। जे.एस.इलियट के अनुसार "गरीबी दूर करने के लिए समाजवादी एक राजनैतिक प्रतिकार है जबकि सहकारिता गैर-राजनैतिक प्रतिकार है।"□

महान कृषि वैज्ञानिक डा. बेंजामिन पियरी पाल

विश्व के सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डा० बेंजामिन पियरी पाल (बी० पी० पाल) एक महान भारतीय पादप प्रजनक और कृषि विज्ञानी थे। उनका जन्म 26 मई, सन 1906 ईस्वी को पंजाब के मुकुंदपुर नामक स्थान पर हुआ था। वे डा० रालाराम और इंदर देवी की संतान थे। परिवार जालंधर से आया था किन्तु पिता एक चिकित्सा अधिकारी के रूप में बर्मा चले गए। उनका जन्म का नाम ब्रह्मा दास परल था लेकिन 1914 में मेम्पो के सेंट माइकल स्कूल में रहते हुए उन्होंने अपना नाम बेंजामिन पियरी पाल रख लिया।

उनको बचपन से ही पेड़-पौधों से बहुत लगाव था। उनके पिता ने उन्हें बगीचे की देखभाल के लिए कहा.. तो उन्होंने न केवल पौधों की देखभाल की, अपितु बागवानी की कई पुस्तकें पढ़कर उन्हें अच्छा भी बनाया। इसप्रकार वे सदा के लिए पौधों के मित्र बन गए। उनके स्कूल में एक गुलाब के बगीचे ने पेड़-पौधों में प्रारंभिक रुचि को और प्रेरित किया।

लंबे समय तक उन्होंने अपनी शिक्षा बर्मा में की। अध्ययन के समय उन्हें छात्रवृत्तियाँ भी मिलती थीं। उन्होंने रंगून विश्वविद्यालय में विज्ञान स्नातक और मास्टर आफ साइंस की डिग्री पूरी की। 1929 ई० में पाल गेहूँ के अनुसंधान के लिए कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय गए और वहाँ पाँच वर्षों तक कड़ी मेहनत के बाद पीएच. डी डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात



- गौरी शंकर वैश्य विनम्र
पूर्व सीनियर पोस्ट मास्टर,
डाक विभाग

वे बर्मा वापस लौट गए। 1932 ई० में उन्होंने बर्मा में एक चावल अनुसंधान अधिकारी के रूप में कार्य किया और फिर दूसरे आर्थिक वनस्पतिशास्त्री के रूप में बिहार के पूसा चले गए।

सन् 1933 ई० में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में शोध कार्य के लिए उनको नियुक्त किया गया। 1934 में रोलैंड बिफेन और बाद में फ्रैंक एंगलडो के अंतर्गत गेहूँ में संकर शक्ति का अध्ययन किया। 1936 में भूकंप के बाद संस्थान नई दिल्ली स्थानांतरित हो गया। वे वहाँ चले गए और सितंबर 1950 में वे संस्थान के निदेशक बन गए।

उस समय भारत पराधीन था तथा कृषि विज्ञान में अनुसंधान का कार्यक्षेत्र अधिक नहीं था। उन दिनों गेहूँ में रस्ट नामक रोग बहुत पाया जाता था, जिससे गेहूँ का पूरा पौधा समाप्त हो जाता था। डा० पाल ने ऐसे गेहूँ का विकास किया, जिसमें



रस्ट (जंग) रोग के प्रतिरोधक हों। उन्होंने कई नई प्रजातियाँ को विकसित करने में मदद की। इन कार्यों से बहुत प्रसिद्धि मिली। उन्होंने 18 वर्षों के कठिन शोध के बाद 1954 में 'एनपी (न्यू पूसा) 700' और 'एनपी 800' श्रंखला तथा 'एनपी 801' गेहूँ की प्रजाति विकसित की, जो देश के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। ये गेहूँ की किस्में तीन प्रकार के रस्ट रोगों का सामना करने में सक्षम थीं। इन अनुसंधानों से डा0 पाल को महान प्रसिद्धि मिली। इसके लिए उन्हें रफी अहमद किदवई पुरस्कार, बीरबल साहनी पदक और एस. रामानुजन पदक जैसे पुरस्कार मिले। हरित क्रांति का प्रारंभ केवल उन्हीं की सफल योग्यताओं के फलस्वरूप हुआ।

डा0 पाल ने गुलाबों पर बड़ा ही महत्वपूर्ण शोध कार्य किया। उन्होंने गुलाबों की कई प्रजातियाँ विकसित कीं। उन्होंने रोज एण्ड बोगेनविलिया सोसाइटी आफ इंडिया तथा इंडियन सोसाइटी आफ जेनेटिक एण्ड प्लांट ब्रीडिंग की स्थापना की तथा इसके जर्नल के संपादक के रूप में भी कार्य किया।

1965 में वे नवगठित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पहले महा निदेशक पद पर नियुक्त हुए

जयति महात्मा बुद्ध

देवि महामाया सुवन, नृप शुद्धोधन तात।
जन्मा शिशु सिद्धार्थ था, लेकर नवल प्रभात।

जन्मे गौतम गोत्र में, पाया गौतम नाम।
मौसी ने पाला उसे, दे ममत्व अभिराम।

बचपन से सिद्धार्थ-मन, था करुणा का स्रोत।
गले लगाया दीन को, प्रेम से ओतप्रोत।

मन में बाद विवाह के, जाग उठा वैराग्य।
त्याग दिया परिवार को, बनी साधना भाग्य।

जरा. रोग और मृत्यु से, उपजा मन में ज्ञान।
सत्य जानने के लिए, किया तपस्या-ध्यान।

बैषाखी पूर्णिमा को, गौतम थे ध्यानस्थ।
'बुद्ध' बने सद्ज्ञान पा, बोधिवृक्ष निकटस्थ।

जोर अहिंसा पर दिया, बलि का किया विरोध।
समझाया दुःख-मुक्ति हित, अष्टांगिक-पथ शोध।

स्वयं तथागत रूप में, त्यागा माया-भोग।
मानवीय सद्कर्म हैं, ध्यान, तपस्या, योग।

पुनर्जन्म का चक्र है, मायावी संसार।
साधन पीड़ा-मुक्ति का, बोधिसत्व आधार।

बुद्ध, धम्म और संघ हैं, बौद्ध धर्म के रत्न।
शिक्षाओं को ग्रहण कर, करें पूर्ति हित यत्न।

जयति महात्मा बुद्ध की, गूँजे देश-विदेश।
मानव के कल्याण हित, मूल्यवान उपदेश।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

और वे 1972 में अपनी सेवानिवृत्ति तक वहाँ कार्य किया। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें भी लिखीं, जिनमें 'सर्च आफ न्यू जींस' तथा 'द रोज इन इंडिया'

उल्लेखनीय हैं।

उनको अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए,
जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं -

1959 में पद्म श्री सम्मान

1968 में पद्म भूषण सम्मान

1972 फेलो आफ रायल सोसाइटी

(एफआरएस) चयनित

1987 पद्म विभूषण सम्मान

उनका निधन दिनांक 14 सितंबर, 1989 को
नई दिल्ली में हुआ।

डा० पाल के कृषि विज्ञान में दिए गए महत्वपूर्ण
योगदान को भुला पाना हम सभी के लिए बहुत ही
असंभव है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के
पुस्तकालय में एक गुलाब उद्यान का नाम उनके
सम्मान में रखा गया है। उनको जेनेटिक, एग्रोनोमी,
प्लांट ब्रीडिंग, गेहूँ और गुलाब आदि दक्षेत्रों में
असाधारण कार्यों के लिए सदैव याद किया जाएगा



और वे महान कृषि विज्ञानी के रूप में प्रशंसनीय
रहेंगे। महान विभूति को शत-शत नमन। □

पता : 117 आदिलनगर, विकासनगर

लखनऊ 226022

दूरभाष 09956087585

श्रमिक दिवस पर

श्रमिक दिवस पर, श्रम साधक का
करें सभी सम्मान।

कार्य निरत रहता, निशि वासर,
श्रम को पूजा मान।।

कभी शीश पर ईंट लाद कर,
चढ़ना ऊँची पाढ़।

मिल हो अथवा खेत सड़क पर,
जिसका कार्य प्रगाढ़।।

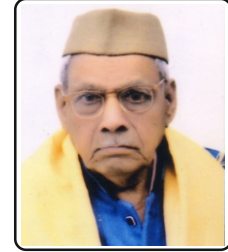
कभी खींचता रिक्शा ठेला,
वर्षा हो या धूप।

फटे वस्त्र में पत्नी शिशु क्या,
जाने ऋतु अनुरूप।।

दुःख उठाता पर न माँगता,
कर फैलाकर भीख।

ऐसे श्रम-साधक से लेना,
हम अबोध को सीख।।

□□□



- दयानन्द जड़िया 'अबोध'

पता : 'चन्द्रा-मण्डप'

370/27, हाता नूरबेग,

संगम लाल वीथिका, सआदतगंज,

लखनऊ-226003





– अयोध्या प्रसाद

कुंआ था, पोखरा था !
उनमें खूब पानी था !
पोखरे में, अनेक जलजीव थे !

नानी का गांव

गर्मियों में, बचपन के
नानी के गांव की,
याद बहुत आती है !
उस ठेठ गांव की
खट्टी मीठी, चुलबुली
यादें अनन्त हैं ।
यादों के फाहे में
नानी का गांव वह !
जस का तस
आज भी जीवंत है !

स्कूल के
ग्रीष्मावकाश होने पर ,
एक ही हठ रहती थी !
शहर की लुभावनी
सुविधाओं के बावजूद,
हम बच्चों को,
नानी के गांव, जाने की
रट लगी रहती थी !

नानी का गांव
हम सब के लिए
एक सुंदर द्वीप था !

परी कथाओं की तरह
आनंददायक और
खुशियों से भरपूर था !

नानी के गांव में,
हल थे, बैल थे !
कच्ची मिट्टी से बने
घर थे, खपरैल के !
दालान था, मड़ई थी !
मिट्टी से पुती हुई,
कच्ची चारदीवारी थी !
कूची से रंगों की,
उस पर चित्रकारी थी !

रहट थे, पुरवट थे !
खेत थे, खलिहान थे !
खूब बड़े मैदान थे !
बड़ी सी बैलगाड़ी थी !
कच्ची कच्ची सड़कें थीं !
साइकिल की सवारी थी !

मिट्टी के चूल्हे थे !
पोतनहर से श्रृंगार था !

कछुए थे, मछलियां थीं !
आसपास पेड़ थे ।
पोखरे के चारो तरफ
बने सुंदर घाट थे !
नानी के गांव में !

उससे कुछ ही दूरी पर
एक बड़ा तालाब था !
भैंसों को, चरवाहे बच्चे
उस बड़े तालाब में
गर्मी से निजात दिलाने
बैठकर, पीठ पर उनके
भैंसों को नहलाते थे !

गाय, भैंस या दोनों ही
हर घर में पाले जाते थे !
दही, छाछ बनाने के भांडे
घर घर में पाए जाते थे !

पुरवट से शुरू होकर
खूब लम्बी नाली थी !
पुरवट के नाधने पर
नाली भर जाती थी !

क्रमशः....

दूर तक के खेतों में वह,
पानी पहुंचाती थी !

तड़के, भोर में ही
मुर्गे की बांग जगाती थी !
सुबह उजाला होते ही

बड़े नीम के पेड़ पर !
चिड़ियों का कलरव और
पंचायत खूब होती थी !
...पास ही बंसवारी थी !
बच्चों के लिए
रोटी और
चोटा या राब संग,
सुबह का नाश्ता
रोज का शिड्यूल था ।

आम के बाग भी
सुबह सुबह
कूल कूल एहसास देते थे !
बड़े, बूढ़े बच्चों संग
सुबह, टहल करते थे !
बच्चों की टोली में
गिरे हुए आमों को
बीनने की होड़ थी !
कमीज के अगले भाग को
झोले सा स्वरूप देकर
उसमें भर लेती थी !

दिन में बगीचे में
जमती थी महफिल,
पेड़ों की घनी छांव में !

हाथ के बने बेनों से
लोग, गरमी भगाते थे !
बड़े, बूढ़े चारपाइयों पर

आराम फरमाते थे !
ठंडी, घनी छांव का,
मनोरम बगीचा वह
आज के रिसार्ट से,
कम नहीं होता था !
साधन बहुत नहीं थे लेकिन,
मनोरंजन भरपूर था !

नानी के गांव में
एक और बगीचा था
जिसमें ढेरों पेड़ थे !
जामुन के, बेल के !
बड़हल और कटहल के !
....खूब खूब फलते थे !

गर, लू लग जाए किसी को
प्याज पीस, रस उसका
शरीर पर लगाते थे ।
कच्चे आम का पना
और सत्तू, नमक संग खाते थे ।

भरी दोपहरी में
बाइस्कोप वाला भी
डमरू बजाते हुए,
गाते हुए आता था !
पांच दस पैसे में
रंगीन तस्वीरों वाला
फिल्में दिखाता था !

कभी, बड़ी बड़ी मूछों वाला
साफा बांधे मदारी भी,

झोला टांगे आता था !
छड़ी के इशारे पर
झबरे काले भालू को
दो टांगों पर नचाता था !

शाम समय बरफ वाला
रंगीन शर्बत की ,
बोतलों संग आता था !
मिट्टी के कुल्हड़ में,
बरफ को महीन घिस कर
उसमें शर्बत मिलाता था !
गरमी से सूखते कंठ को
तरावट दिलाता था !

गेहूं की बालियों पर
बैलों के गोल गोल घूमने से
भूसा निकलता था !
निकले हुए भूसे पर
कथरी बिछाकर
सोते थे रात भर !
जेठ के महीने में भी
भोर में लगती थी सर्दी !
ओढ़ते थे लोई, कम्बल
नानी के गांव में !

सब हिलमिल रहते थे
खूब भाईचारा था !
बड़े बड़े कुनबे थे !
सभी अपने से थे !
पढ़े लिखे कम थे भले,
किंतु मनमुटाव से दूर ,
सद्भाव से परिपूर्ण थे !

□□□

पता : म०नं०-551घ/506, नन्दनगर, (निकट जय प्रकाश नगर)
आलमबाग, लखनऊ-226005 म०- 8318926738

परमाणु ऊर्जा : स्थायी ऊर्जा भविष्य की ओर

प्रस्तावना :

वैश्विक जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना करने के प्रयासों में परमाणु ऊर्जा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ब्रसेल्स में आयोजित हालिया परमाणु ऊर्जा शिखर सम्मेलन इस बात का द्योतक है कि कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के लक्ष्यों को प्राप्त करने में परमाणु ऊर्जा की भूमिका को अब व्यापक रूप से स्वीकार किया जा रहा है। बेलजियम के प्रधान मंत्री अलेक्जेंडर डी क्रो और अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के महानिदेशक राफेल मारियानो ग्रेसी की सह-अध्यक्षता में आयोजित इस शिखर सम्मेलन ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए परमाणु ऊर्जा की आवश्यकता पर बल दिया। यह शिखर सम्मेलन दिसंबर 2023 में दुबई में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP28) के दौरान किए गए प्रयासों का एक महत्वपूर्ण परिणाम है, जहां विश्वभर के नेताओं ने जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वर्ष 2050 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता को तीन गुना करने की आवश्यकता पर जोर दिया था। अन्य नवीकरणीय स्रोतों की तुलना में काफी कम कार्बन उत्सर्जन,



डा० दीपक कोहली,

विशेष सचिव, नगर विकास,
उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।

मो० : 945410037

निर्बाध ऊर्जा उत्पादन की क्षमता और लागत प्रभावशीलता जैसे उल्लेखनीय गुणों के कारण परमाणु ऊर्जा वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा मिश्रण का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है।

परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में वित्तपोषण नीतियों का पुनर्मूल्यांकन :

परमाणु ऊर्जा कम कार्बन उत्सर्जन वाला एक विश्वसनीय ऊर्जा स्रोत होने के बावजूद, वित्तपोषण संबंधी चुनौतियों का सामना कर रहा है। बहुपक्षीय विकास बैंकों और निजी क्षेत्र के निवेशकों का परमाणु परियोजनाओं में निवेश करने में संकोच रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में वित्तीय संसाधनों की कमी हो गई है। विश्व बैंक द्वारा 1950 के दशक के उत्तरार्ध से परमाणु परियोजनाओं के वित्तपोषण से दूरी बनाए रखना, परमाणु क्षेत्र को वित्तीय समर्थन प्रदान करने में मौजूद अनिच्छा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस वित्तीय कमी को पाटने के लिए,

परमाणु ऊर्जा क्षेत्र को अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने और वैश्विक स्तर पर डीकार्बोनाइजेशन के प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए, परमाणु वित्तपोषण नीतियों का तत्काल पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। इस पुनर्मूल्यांकन में निजी पूंजी या मिश्रित वित्तपोषण माडल को अपनाना शामिल होना चाहिए। ये माडल सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के संसाधनों का लाभ उठाकर परमाणु परियोजनाओं से जुड़े वित्तीय जोखिमों को कम कर सकते हैं और बड़े पैमाने पर निवेश आकर्षित कर सकते हैं। फ्रांस, दक्षिण कोरिया, रूस और ब्रिटेन जैसे देशों में सफलतापूर्वक कार्यान्वित किए जा रहे सहकारी वित्तपोषण माडल को अपनाने और अभिनव वित्तीय व्यवस्थाओं को लागू करने से परमाणु ऊर्जा क्षेत्र न केवल वित्तीय संसाधन प्राप्त कर सकता है बल्कि वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

परमाणु ऊर्जा के बुनियादी ढांचे और वित्तपोषण में विकास और मांग में असमानता :

परमाणु ऊर्जा की बढ़ती मांग : जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में परमाणु ऊर्जा की वैश्विक मांग बढ़ रही है। बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए कई देश परमाणु ऊर्जा पर अपनी निर्भरता बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।

विकास में असमानतारू हालांकि, बढ़ती मांग के बावजूद, परमाणु ऊर्जा के बुनियादी ढांचे के विकास और वित्तपोषण में अपेक्षित वृद्धि नहीं देखी गई है। महत्वाकांक्षी परमाणु विस्तार योजनाओं वाले चीन जैसे देश भी परियोजनाओं में देरी, बढ़ती लागत और परियोजना रद्दीकरण या दिवालियापन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। न्यूस्केल पावर, वेस्टिंगहाउस और अरेवा जैसी कंपनियों ने इन चुनौतियों का अनुभव किया है। इसके अतिरिक्त वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा मिश्रण में परमाणु ऊर्जा की क्षमता और उसके वर्तमान योगदान के बीच पर्याप्त अंतर वित्तपोषण चुनौतियों का समाधान करने की तात्कालिकता को रेखांकित करता है। उदाहरण के लिए, भारत में, अन्य स्रोतों की तुलना में प्रतिस्पर्धी

परमाणु ऊर्जा लागत है। हालांकि, नकारात्मक जन धारणा, बोझिल नियामक बाधाओं और लंबी परियोजना समयसीमा जैसे कारकों द्वारा भी बाधित है। वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में कमी के प्रयासों में परमाणु ऊर्जा की पूरी क्षमता को उजागर करने के लिए इन चुनौतियों का व्यापक पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है।

भारत का परमाणु ऊर्जा परिदृश्य : चुनौतियों और अवसरों का समन्वय :

भारत का परमाणु ऊर्जा क्षेत्र एक विशिष्ट केस अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें चुनौतियों और अवसरों दोनों का समावेश है। तारापुर में देश का पहला वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा संयंत्र प्रतिस्पर्धी दरों पर विश्वसनीय ऊर्जा प्रदान करता है जो परमाणु ऊर्जा की आर्थिक व्यवहार्यता को दर्शाता है। तमिलनाडु में कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा परियोजना भारत की क्षमता का एक अन्य उदाहरण है। हालांकि, सुरक्षा, विनियमन और उच्च प्रारंभिक लागत से जुड़ी चिंताओं के कारण भारत के नवीकरणीय ऊर्जा पोर्टफोलियो में परमाणु ऊर्जा की हिस्सेदारी बहुत सीमित बनी हुई है। इन चुनौतियों के बावजूद, हालिया घटनाक्रम भारत के परमाणु उद्योग में एक सकारात्मक बदलाव का संकेत देते हैं, जिसमें महत्वपूर्ण क्षमता विस्तार और उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकियों में निवेश की योजनाएं शामिल हैं। प्रधान मंत्री द्वारा परमाणु ऊर्जा का समर्थन और निजी निवेश को आकर्षित करने के प्रयास भारत में परमाणु ऊर्जा की पूरी क्षमता के दोहन की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

सुझाव :

परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं के लिए निजी पूंजी और मिश्रित वित्तपोषण माडल को बढ़ावा देना चाहिए। परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं से जुड़े वित्तीय जोखिमों को कम करने के लिए सहकारी वित्तपोषण माडल का उपयोग करना चाहिए।

परमाणु ऊर्जा के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना और नकारात्मक धारणाओं को दूर करना चाहिए। नियामक बाधाओं को सरल बनाना और परियोजना अनुमोदन प्रक्रिया को तेज करना अवश्यक है। परमाणु ऊर्जा परियोजनाओं के लिए अनुसंधान



और विकास में निवेश करना अवश्यक है ।

उपसंहार :

परमाणु ऊर्जा जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध वैश्विक प्रयासों में एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में उभरी है, जो कम कार्बन उत्सर्जन और विश्वसनीय ऊर्जा प्रदान करने की अद्वितीय क्षमता रखती है। हालांकि, परमाणु ऊर्जा की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए वित्तपोषण, बुनियादी ढांचे के विकास और सार्वजनिक धारणा से संबंधित महत्वपूर्ण चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है।

परमाणु वित्तपोषण नीतियों का पुनर्मूल्यांकन करके, नवीन वित्तीय तंत्रों का लाभ उठाकर और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर, परमाणु ऊर्जा क्षेत्र मौजूदा बाधाओं को पार कर सकता है और स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन की आधारशिला बन सकता है। भारत का परमाणु ऊर्जा परिदृश्य परमाणु उद्योग के सामने आने वाली व्यापक वैश्विक चुनौतियों और अवसरों का एक सूक्ष्म जगत है, जो परमाणु ऊर्जा की परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। जैसे-जैसे दुनिया भर के देश महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, परमाणु ऊर्जा आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी ऊर्जा भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है। □

पता : 5/104, विपुल खंड,

गोमती नगर, लखनऊ-226010

उत्तर प्रदेश

मोबाइल - 9454410037

सारंग त्रिपाठी

अपर जिला सहकारी अधिकारी
अधिकोषण अनुभाग,
मुख्यालय सहकारिता।



‘सहकारिता विभाग’



सहकारिता विभाग देश में,
कृषकों का हितकारी है।
जन सेवा के केन्द्र खुल गये,
उन्नति सबकी जारी है।।
जन औषधि की सुविधा से अब,
घर में खुशियाली आयी।
जेब का भार हुआ कम सबका,
सहकारी फसल लहराई।।

अब किसान को नहीं भटकना,
सुविधा लेने इधर-उधर।
नवाचार का पाठ पढ़ रहा,
सहकारिता विभाग सुधर।।

इस विभाग की गरिमा को हम,
फिर लौटा कर लायेंगे।
नवाचार से इस विभाग को,
नम्बर व पा लायेंगे।।



दूरभाष : 9935603236

(बाल कविता)

गिल्लू बहुत सताती है

मम्मा काटो लता बेल यह
गिल्लू बहुत सताती है।
खुद आती सारे साथी भी लाती
चिक चिक शोर मचाती है।
इधर-उधर फिर कूद-कूदकर
पत्तों पर चढ जाती है,
झांक झांक कर खिड़की से
प्रतिदिन सुबह जगाती है।
मम्मा काटो लता बेल यह.....
देर रात होम वर्क करूं मैं
फिर जाकर सो पाती जब
सरर सरर पत्तों पर दौड़े
सोना मुश्किल कर जाती है।
मम्मा काटो लता बेल यह.....
काली काली इसकी आंखे,
खिड़की की जाली से झांके
झबरीली सी पूंछ हिलाती,
अजब गजब इतराती है।
मम्मा, काटो लता बेल यह.....
जैसे मैं कमरे से बाहर जाता हूं
झट से ये आ जाती है
सूंघ सूंघ कर सभी खिलौने
खुद से जाने क्या बतलाती है।
मम्मा, काटो लता बेल यह.....

□□□



श्रीमती किरन कान्ती

प्रशासनिक अधिकारी, (कम्प्यू0सेल)
कार्यालय आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ0प्र0,
लखनऊ।

पता :

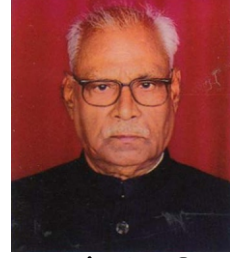
304 पिंक सिटी कालोनी,
बुद्धेश्वर चौराहा, मोहान
रोड, लखनऊ।

मो0 : 7071553009

हमारे विकासोन्मुख गाँव

कभी किसी कवि ने लिखा था 'अहो! ग्राम्य जीवन भी क्या है।' कविता की यह पंक्ति बताती है कि तब ग्राम्य जीवन में सुख, शान्ति एवं समृद्धि थी। ग्रामीण परिश्रमी, ईमानदार, सदाचारी निश्चल, प्रवृत्ति प्रेमी, मिलनसार, और परोपकारी थें। आजादी की लड़ाई में उन्होंने भरपूर सहयोग दिया था। गांधी जी ने समझ लिया था कि इस देश की शक्ति यहाँ का पढ़ा-लिखा आदमी नहीं है। इस देश की शक्ति तो गाँव का आदमी है..... अगर स्वाधीनता लेनी है तो इन निरक्षरों के बल पर लो। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी ने चम्पारन के किसानों से ऊर्जा प्राप्त की थी। किसानों, मजदूरों, देशभक्तों के सहयोग और गांधी जी के नेतृत्व में भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। ग्रामोत्थान के लिए अनेक योजनाएं बनीं और उन पर कुछ अमल भी हुआ। आधुनिकता की लहर, शहरी जीवन जीने की ललक और भोग की बलवती इच्छा ने गाँवों की प्रकृति को बदलने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। आज गाँवों की सभ्यता और संस्कृति इस प्रकार बदली है कि वे न तो गाँव हैं और न शहर। वस्तुतः हमारे 7 लाख गाँव संक्रान्तिकाल से गुजर रहे हैं।

हजारों-लाखों वर्षों का इतिहास बताता है कि सामान्यतः हमारे गाँवों के घर मिट्टी तथा पहाड़ी क्षेत्रों में लकड़ी के घर होते थे। अब भी वैसे घर हैं और पक्की ईंटों के घर भी तेजी से बन रहे हैं। एक ही घर में 2-3 कमरे कच्चे और एक कमरा पक्का है। स्पष्ट है कि कच्चे घर जा रहे हैं और पक्के घर आ रहे हैं। इस परिवर्तन को संक्रांति काल कहते हैं। पहले ग्रामीण धोती कुर्ता पहनते और सिर पर टोपी/साफा/पगड़ी बाँधते थे। मिरजई, बगलबंदी और सलूका पहनने का भी रिवाज था। महिलाएं धोती/साड़ी बाँधती और ब्लाउज पहनती थीं। अब वे सलवार सूट तथा कुर्ता, लैगिंग में नजर आती हैं। मुस्लिम पुरुष कुर्ता/कमीज दुपल्ली टोपी और ऊँचा पायजामा पहनते थे। मुस्लिम महिलाएं सलवार, घाघरा, कमीज पहनती थी। बुर्के से मुह ढकती थीं।



डॉ० ओ.पी. मिश्र,
डी.लिट (अर्थशास्त्र)

अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्रान्त
सम्मान-2023

अवन्तीबाई साहित्य सम्मान-2021

विद्या भूषण सम्मान-2014

अब इनमें भी बदलाव दीख रहा है। पुरुष पैंट और बुशर्ट पहनते हैं क्योंकि यह सस्ती तथा सुविधाजनक पोशाक है। विशेष अवसर पर हिन्दू कोट, पैंट और टाई में देखे जाते हैं और मुसलमान शेरवानी तथा चूड़ीदार पायजामा में। पुराना पहनावा जा रहा है और नया आ रहा है।

खान-पान में परिवर्तन देखा जा रहा है। हिन्दू सामान्यतः रोटी (बेझरा, जौ, कोंदों आदि) दाल, भात और सब्जी खाते थे। हिन्दुओं में कुछ क्षत्रिय मांसाहारी थे। मुसलमानों की अधिकांश आबादी मांसाहारी थी। पासी, नट, कंजड़ तथा कई आदिम जातियाँ लोमड़ी, सियार, सर्प, खरगोश, सुअर आदि का शिकार करती थी और उनका कच्चा/पक्का मांस खाती थी। आज भी कमोवेश वही स्थिति है। गेहूँ की रोटी और सब्जियाँ खाने का चलन बढ़ा है। मोटे अनाज और दाले महंगी हो गयी हैं। इस समय कुछ क्षेत्रों में तंदूरी रोटी, रूमाली रोटी और पनीर खाना फैशन हो रहा है। पिज्जा, मैगी, इडली, दोसा, छोला भटूरा भी पसंद किया जा रहा है। गाँवों में पहले शरबत पीने और पिलाने का रिवाज था। अब उसकी जगह चाय है। होटलों तथा रेस्तराओं ने खान-पान में परिवर्तन लाने में सक्रिय भूमिका निभाई है।

यातायात के साधनों में परिवर्तन द्रष्टव्य है।

पहले बैलगाड़ी, ऊँट गाड़ी, हाथी, घोड़ा, पालकी आने-जाने के प्रमुख साधन थे। अब ये सब दिनातीत हो गए हैं। इसका स्थान साइकिल, जीप, बाइक और कार ने ले लिया है। गाँवों तक सड़कें बन जाने से यह साधन लोकप्रिय हो रहे हैं। हाथी और ऊँट मेले-ढेले में ही दिखाई पड़ते हैं क्योंकि उन पर सवारी कर किशोर और बच्चे खुश होते हैं।

कृषि सभ्यता का प्रमुख घटक है। देश की 51 प्रतिशत जनसंख्या कृषक है। पहले कृषि कार्य हल-बैल से होता था। बुवाई, कटाई, मड़ाई आदि किसान ही करते थे। अब यह काम मशीनों से होने लगा है। परम्परागत खेती का स्थान आधुनिक खेती ने ले लिया है। बागों में खलिहान पड़ना बंद हो गया है। किसान केवल दूध के लिए गाय और भैंस पालते हैं। बूढ़े मवेशी छोड़ दिए जाते हैं जो इधर-उधर घूम कर दम तोड़ देते हैं। बछड़ों और पाड़ों का भी यही हाल है। यह पशु आवारा हो गए हैं। किसानों की खड़ी फसल को चरते हैं, रौंद डालते हैं। गाँवों के कारीगर-नाई, दर्जी, कुम्हार, लुहार, जुलाहा, चमार अपना धंधा खो बैठे हैं। जजमानी प्रथा लगभग समाप्त है। ब्रांडेड वस्त्र, स्टील के बर्तन, विभिन्न कम्पनियों के जूते और चप्पलों की बिक्री ज्यादा है। कई प्रकार के कारीगर मजदूर हो गए हैं। गाँवों के कुटीर उद्योग नष्ट प्रायः हैं। मशीनों द्वारा बना माल न केवल सस्ता होता है बल्कि आकर्षक भी।

गाँवों की संस्कृति भी संक्रांति काल से गुजर रही है। संस्कृति के अंग हैं धर्म, शिक्षा, रीतिरिवाज और मनोरंजन के साधन। अभी तक गाँव में धर्म किताब और उपदेश का विषय नहीं बल्कि व्यवहार का विषय था। ग्रामीण सच बोलते थे, परोपकार करते थे, धोखाधड़ी से दूर रहते थे अर्थात् वे सुसंस्कृत एवं संस्कारित थे। ग्रामीणों के इस व्यवहार के विषय में पं० विद्यानिवास मिश्र ने लिखा है "कम पढ़े और अनपढ़ लोग शास्त्रीय विधि से पूजा पाठ नहीं करते पर पर्वों पर कष्ट सहकर भी स्नान करने अवश्य जाते हैं..... चारों धाम जाते हैं..... कुम्भ नहाते हैं। स्नान के बाद ही कुछ खा लेते हैं या बाटी भुरता बना लेते हैं।" निष्कर्ष यह कि तन और मन की पवित्रता के वे आग्रही रहे हैं। ग्रामीण यद्यपि अनपढ़

या अल्प शिक्षित थे, किन्तु उनका हृदय प्रेम से लबालब भरा था। हृदय वाले ही मानवता के भूषण हैं। पढ़े-लिखे सामान्यतः आत्म केंद्रित हैं। आजादी के बाद गाँव में भी आधुनिकता और शहरीपन पहुँचा। गाँववासियों के स्वभाव और व्यवहार में परिवर्तन हुआ। उनमें चंट चालाकी, रूखापन और अवसरवादिता आ गई। कुछ अपवादों को छोड़कर शहर के लोग हँस-हँस कर डसने में माहिर होते हैं। गाँव वालों ने इसे भी सीख लिया। सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' ने सर्प को सम्बोधित करते लिखा है-

साँप!

तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में वसना भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूँछ-उत्तर दोगे?

तब कैसे सीखा डसना

विष कहाँ पाया?

गाँव वासियों में वह भोलापन, सिधाई और सादगी नहीं रह गई जो कभी थी। उनकी संवेदनाएँ सूख रही हैं। हिन्दुओं और मुसलमानों में प्रेमभाव का ह्रास हो गया है। हिन्दुओं को बहुसंख्यक होने का गुमान है तो मुस्लिमों को मुस्लिम शासकों के वंशज होने का।

गाँवों में त्योहार और रीति-रिवाज बड़ी तैयारी और उल्लास से मनाए जाते थे। मँहगाई, सौमनस्य का अभाव, पर्व के प्रति उपेक्षा/उदासीनता का फल है कि होली, दीवाली, रक्षाबंधन, दशहरा और ईद सभी रस्मी हो गए हैं। विवाह-शादी के अवसर पर गाए जाने वाले गीत गायब हैं। क्या निम्नलिखित गीत अब कहीं गाया जाता है-

तू त चल सपुता गौरी विहायन गौरी विहायन

दुधुआ के मोल कई लेउ,

खरग तरइया भले विसनि जइहँ

दुधवा के मोल नहीं होइ,

गइया त दुधुआ हटिया बिकाला

बटिया विकाला

मइया के दूध अनमोल।

आज से कई दशकों पूर्व गाँव के मनोरंजन के साधन थे चौपाल पर आल्हाखंड का ओजपूर्ण गायन और विदेसिया लोक नाटक, का मंचन।

कभी-कभी गाँव के बाहर मैदान में 'सुल्ताना डाकू' नौटंकी होती थी। "तेरी बातों से जाहिर मुझे यह हुआ, इश्क तेरा रहा किसी कंगाल से" सुनते ही गाँव उमड़ पड़ते थे। इनके अतिरिक्त मनोरंजन के साधन थे- बैलगाड़ी दौड़, कबड्डी, पहलवानी, वॉलीबाल, खो-खो, पतंगबाजी, मुर्गो, तीतरों तथा सुअरों की लड़ाई आदि। मनोरंजन के इन खेलों से ग्रामीण निरोग, प्रसन्न और स्वस्थ रहते थे। अब इनका स्थान सिनेमा, रेडियो, टी.वी. तथा क्रिकेट ने ले लिया है। पुराने मनोरंजन के साधन लुप्तप्राय हैं। किशोर छुपा छुपौवल, लपाचू, गिल्ली डंडा, गुच्ची तथा किशोरियाँ गुट्टा तथा लंगड़ी छू खेलती थी। यह सब अब गाँवों में देखने में नहीं आता। क्रिकेट का भूत ग्रामीण युवाओं पर इस कदर सवार है कि यह खेल खेतों तक में खेला जा रहा है।

शहरों के गाँवों तक पहुँचने का परिणाम है-ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति में परिवर्तन, नशेबाजी, दूत क्रीड़ा, फैशन परस्ती, मुकदमेबाजी, सूदखोरी आदि बुराइयों की प्रधानता। गाँव का दूध, दही, मक्खन, घी, पनीर, मट्ठा आदि जो गाँवों में बनता है वह शहर चला जाता है। कितनी बड़ी विडम्बना है जो इनको तैय्यार करने वाले हों वही इनसे वंचित रह जाएँ। शायद अर्थार्जन इसके पीछे है।

आए दिन चुनावों ने गाँवों में जातिवाद की जड़े मजबूत की हैं। प्रत्याशी उस क्षेत्र से खड़े होते हैं जहाँ उनकी जाति के मतदाता अधिक हों। संविधान में जातिहीन और वर्गहीन समाज का आदर्श रखा गया है। आदर्श संविधान के पन्नों तक ही सिमट कर रह गया है। राजनीति में नीति नहीं रह गई है। नेता रहवर का लवास ओढ़कर रहजनी कर रहे हैं। रफीक सादानी ने लिखा है-

जियो बहादुर खदरधारी,
देश को लूटो बारी-बारी।

कल तक जो टूटी-फूटी साइकिल से चलते थे वही ब्लाक प्रमुख, विधायक और सांसद होकर लगजरी कार से चल रहे हैं। आज की राजनीति सेवा पर नहीं स्वार्थ पर केन्द्रित है। नेता जीतते हैं

किन्तु जनता ही प्रत्येक चुनाव में हारती है।

गाँवों में सामाजिक रूप से उठने की होड़ाहोड़ी है। लुहार मिश्र हो रहे हैं और बड़ई शर्मा। चमार रैदास हैं। नाई पहले नाम के आगे श्रीवास्तव लिखते हैं फिर 10-15 वर्षों में वे श्रीवास्तव हो जाते हैं। ब्राह्मण धाकर से कुलीन हो गए हैं। विभिन्न प्रदेशों में जातियों के मजबूत संगठन हैं जैसे खाप (हरियाना) मिसल (पंजाब) और कुदारिया (मध्यप्रदेश)।

नियोजित आर्थिक विकास में गाँवों को जो मिला है वह बीच में ही लुट गया। गाँवों में विकास कम है, प्रचार ज्यादा है। मनरेगा में धालमेल है। गाँवों की दलबन्दी, अवसरवादिता, जातिवाद, चाटुकारिता आदि का चित्रण रेणु के 'आधा गाँव', श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरवारी' और काशीनाथ सिंह के 'रेहन पर रघू' उपन्यासों में किया गया है। गाँव के नेता, बड़े किसान, बड़े व्यापारी और महाजन पहले से अधिक सम्पन्न हो गये हैं। छोटे और सीमान्त किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी, कारीगर और दरिद्र हो गए हैं किन्तु इन गरीबों के कंधों पर ही अमीर खड़े हैं-

वो जिसके हाथ में छाले हैं, पैरों में बिवाई हैं,
उसी की दम से रौनक आपके बँगले में आई है।

न भूलो, तुमने ये ऊँचाइयाँ भी हमसे छीनी हैं,
हमारा कद नहीं लेते तो आदम कद नहीं होते।।

मैं ऐसा नहीं मानता कि ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति में जो परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं वे सभी बुरे हैं। जो हितकर हो, हमारी ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल हो तथा होरी, धनिया, मटरू, सुक्खा, फकीरे आदि के जीवन में प्रभात लाने वाले हो उन्हें अपनाया जाना श्रेयस्कर है। □

पता : 610/368 जी,
केशवनगर, सीतापुर रोड,
लखनऊ-226020
मो0 : 9559419018



आज नहीं अनादि काल यानी कि प्राचीन काल से ही यह परंपरा चली आ रही है कि घर में तुलसी का पौधा होना चाहिए। ऐसी भ्रान्ति समाज में फैला दी गयी है कि जहाँ जिस घर में तुलसी का पौधा होता है वह घर सनातनी हिन्दुओं का घर होता है बल्कि ऐसा नहीं तुलसी का पौधा एक औषधिक पौधा है इसलिए इसे हर आदमी अपने घर के आस-पास लगाना पसन्द करता है। शास्त्रों में तुलसी को पूज्यनीय पवित्र और देवी के स्वरूप माना गया है। इस कारण घर में तुलसी हो तो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। यदि ये बातें ध्यान रखी जाती हैं तो सीधे-सीधे उस घर में देवी-देवताओं की विशेष कृपा बनी रहती है। घर में सकारात्मक और सुखद वातावरण बना रहता है। पैसों की कमी नहीं आती है और परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। कहा जाता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा नहीं होता उस घर में भगवान भी रहना पसंद नहीं करते। ऐसा हमारे धर्मग्रन्थ एवं सनातन विचार के लोगों के दिलों-दिमाक में रचा-बसा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संस्थापक तथा हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा के विद्वान पुरुष हिन्दी भाषा का देश तथा विदेशों में भी प्रचार-प्रसार करने वाले माँ सरस्वती का आशिर्वाद प्राप्त अनेकों-अनेक सम्मानों और पुरुस्कारों से सुसज्जित हिन्दी भाषा की जान

तुलसी का पौधा



रामफेर

पुस्तकालयाध्यक्ष,
केन्द्रीय पुस्तकालय, पशुपालन विभाग

सम्मानित यशस्वी डॉ० सूर्यप्रसाद दीक्षित जी का मानना है कि तुलसी का पूरा अर्थ होता है राममय। आचार्य दीक्षित जी ने इस नाम को कुछ इस प्रकार से सिद्ध करते हैं। जैसे कि 'तु' का मतलब यानी राम, 'ल' का मतलब यानी लक्ष्मण, 'सी' का मतलब यानी माँ सीता से है। इस प्रकार से तुलसी के नाम में सम्पूर्ण राम, लक्ष्मण, सीता को समाहित किया है। इस तुलसी नाम को कुछ इस प्रकार से व्याख्यायित किया है। राम परिवार या राममय है। भारत में तुलसी के पौधों को बहुत ही पवित्र और धार्मिक मानकर अत्यधिक सम्मान दिया जाता है। लेकिन तुलसी केवल धार्मिक कर्मकाण्डों में ही काम नहीं आता जीव-जीवन की कई समस्याओं को चुटकी बजाते ही दूर कर देती है। जहाँ तक मेरा मानना है कि इस औषधिक पौध का संरक्षण करो। अन्धविश्वास, परम्परा को मानों या न मानों यह आपके विवेक पर निर्भर है। पर यह सत्य है कि तुलसी का पौधा एक औषधिक पौधा है। इसलिए इसका रक्षण/संरक्षण करो और अपने घरों में तथा घरों के आस-पास अवश्य की लगाओ।

तुलसी एक ऐसी जड़ी-बूटी है जो कहीं भी

आसानी से मिल जाती है। तुलसी में एक या दो नहीं बल्कि कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। किसी भी समय और किसी भी उम्र में तुलसी के पत्तों का सेवन किया जा सकता है। ये हर उम्र के लिए फायदेमंद है। कई प्रकार के विटामिन खनिज और पोषक तत्वों से भरपूर तुलसी का इस्तेमाल गर्भावस्था में भी करना फायदेमंद होता है। गर्भावस्था में इसके सेवन से कई तरह की बीमारियों और संक्रमण होने के खतरे कम हो जाते हैं। तुलसी में हीलिंग का गुण पाया जाता है। इसकी पत्तियों में एण्टीबैक्टीरियल गुण होता है। इसके साथ ही ये पत्तियाँ एण्टीवायरल और एण्टी फंगल गुणों से भी भरपूर होती हैं। तुलसी के पत्तों के नियमित सेवन से ढलती उम्र के लक्षण जल्दी सामने नहीं आते और कई खतरनाक बीमारियों से लड़ने में भी मदद मिलती है।

इन दिनों में नहीं तोड़ना चाहिए तुलसी के पत्ते : शास्त्रों के अनुसार तुलसी के पत्ते कुछ खास दिनों में नहीं तोड़ने चाहिए ये दिन हैं एकादशी, रविवार और सूर्य या चंद्र ग्रहण काल में। इन दिनों में और रात के समय तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ने चाहिए। बिना उपयोग तुलसी के पत्ते कभी नहीं तोड़ने चाहिए। ऐसा करने पर व्यक्ति को दोष लगता है। तुलसी क्या अगर आप ईश्वर को मानते हैं तो किसी भी पेड़-पौधे को बिना जरूरत के तोड़ना नहीं चाहिए। अनावश्यक रूप से तुलसी के पत्ते तोड़ना तुलसी को नष्ट करने के समान माना



गया है।

रोज करें तुलसी का पूजन- हर रोज तुलसी पूजन करना चाहिए। इसी के साथ ही यहाँ बताई जा रही सभी बातों का भी ध्यान रखना चाहिए। साथ ही हर शाम तुलसी के पास दीपक लगाना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि जो लोग शाम के समय तुलसी के पास दीपक लगाते हैं उनके घर में महालक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

तुलसी से दूर होते हैं वास्तुदोष - तुलसी एक औषधिक पौध है। तुलसी घर आँगन में होने से कई प्रकार के वास्तु दोष भी समाप्त हो जाते हैं और परिवार की आर्थिक स्थिति पर शुभ असर होता है। तुलसी का पौधा घर में हो तो नहीं लगती है बुरी नजर। ऐसी मान्यता है कि तुलसी का पौधा होने से घर वालों को बुरी नजर प्रभावित नहीं कर पाती है। साथ ही सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा सक्रिय नहीं हो पाती है। सकारात्मक ऊर्जा को बल मिलता है।

तुलसी का सूखा पौधा नहीं रखना चाहिए। घर में यदि लगा हुआ है तुलसी का पौधा सूख जाता है तो उसे निकालकर किसी पवित्र नदी में या तालाब में या कुएँ में प्रवाहित कर देना चाहिए। तुलसी का सूखा पौधा घर में रखना अशुभ माना जाता है। सूखा पौधा हटाने के बाद तुरन्त नया पौधा लगा लेना चाहिए। सूखा हुआ तुलसी का पौधा घर में होने से बरकत पर बुरा असर पड़ सकता है ऐसी धार्मिक मान्यता है। इसी वजह से घर में हमेशा पूरी तरह स्वस्थ तुलसी का पौधा ही लगाया जाना चाहिए। तुलसी है औषधि भी तुलसी का धार्मिक महत्व तो है साथ ही आयुर्वेद में इसे संजीवनी बूटी के समान माना जाता है।

तुलसी में कई ऐसे गुण होते हैं जो कई बीमारियों को दूर करते हैं और कई बीमारियों की उनकी रोकथाम करने में सहायक हैं। तुलसी का पौधा घर में रहने से उसकी सुगन्ध से वातावरण को पवित्रता मिलती है और हवा में माजूद बीमारी फैलाने वाले कई सूक्ष्म कीटाणुओं को नष्ट कर देता है।

रोज तुलसी की एक पत्ती सेवन करने से मिलते हैं ये फायदे। तुलसी की सुगन्ध हमें श्वास संबंधी कई रोगों से बचाती है। साथ ही तुलसी की एक पत्ती रोज सेवन करने से हम सामान्य बुखार से बचे रहते हैं। मौसम परिवर्तन के समय होने वाली स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों से बचाव हो सकता है। तुलसी की पत्ती सेवन करने से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता काफी बढ़ जाती है। लेकिन हमें नियमित रूप से तुलसी की पत्ती का सेवन करते रहना चाहिए। तुलसी के पत्ते चबाना नहीं चाहिए। तुलसी के पत्तों के सेवन करते समय ध्यान रखना चाहिए कि इन पत्तों को चबाएं नहीं, बल्कि निगल लेना चाहिए। इस प्रकार तुलसी का सेवन करने से कई रोगों में लाभ प्राप्त होता है।

तुलसी के पत्तों में पारा धातु के तत्व भी विद्यमान होते हैं, जो कि पत्तों को चबाने से दाँतों पर लग जाते हैं। ये तत्व दाँतों के लिए फायदे मंद नहीं होते हैं। अतः तुलसी के पत्तों को बिना चबाएं निगलना चाहिए। तुलसी के पत्ते शिवलिंग और गणेश पूजन में वर्जित हैं। तुलसी के पत्ते यूँ तो पूजन में तुलसी का विशेष महत्व है पर शिवपूजन और गणेश पूजन में तुलसी का प्रयोग वर्जित है। इसके लिए पुराणों में दो कथा बताई गयी हैं। एक कथा के अनुसार भगवान शिव तुलसी के पति दैत्यों के राजा शंखचूड़ का वध किया था, जिसके फलस्वरूप न तो शिवपूजन में तुलसी काम में लेते हैं और न ही शंकर के शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं। जबकि एक अन्य कथा के अनुसार एक बार गणेश जी ने तुलसी का विवाह प्रस्ताव यह कह कर अस्वीकार कर दिया की वो ब्रम्हचारी हैं, जिससे रूष्ट होकर तुलसी ने उन्हें दो विवाह का श्राप दे दिया। प्रतिक्रिया स्वरूप गणेश जी ने तुलसी को एक राक्षस से विवाह का श्राप दे दिया। इसलिए गणेश पूजन में भी तुलसी का प्रयोग वर्जित है।

सर्दी की बीमारियों में तुलसी है रामवाण - अगर आपको सर्दी में जुकाम बुखार या सर्दी लग गई तो मिश्री, काली मिर्च, तुलसी के पत्तों को पानी

में अच्छी तरह से पकाकर उसका काढ़ा बनाकर पी लें तुरंत आराम आ जाएगा। चोट लग जाने पर अगर आपको कहीं चोट लग गयी हो तो तुलसी के पत्ते को फिटकरी में मिलाकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है।

श्वॉस संबंध रोग- जिन लोगों को श्वॉस संबंधी कोई बीमारी है, उन्हें दूध में तुलसी उबालकर पीने से तुरन्त राहत मिलती है। तुलसी का दूध इस स्थिति में बहुत आराम देता है। स्ट्रेस तथा टेंशन में तुलसी के पत्तों को उबालकर बनाई गयी चाय से स्ट्रेस तुरन्त दूर होती है और शरीर की थकान में भी आराम आता है। किडनी में स्टोन अगर किसी व्यक्ति की किडनी में स्टोन पथरी की समस्या है तो उसे तुलसी मिश्रित दूध पीना चाहिए। इससे किडनी में पथरी अपने आप गल कर बाहर आ जाती है।

माइग्रेन तथा लंबे समय से चल रहे सिरदर्द के लिए दूध में तुलसी उबालकर पीने से लंबे समय से चला आ रहा सिरदर्द तथा माइग्रेन की समस्या भी बिल्कुल ठीक हो जाती है। मुँह तथा साँस की बदबू दूर करने के लिए अगर मुँह या साँस से बदबू आ रही है तो तुलसी के कुछ पत्तों को चबा लें। इससे बदबू तुरन्त दूर हो जाती है। शारीरिक दुर्बलता तथा नपुंसकता के लिए तुलसी पुरुषों की शारीरिक दुर्बलता तथा नपुंसकता भी दूर करती है। तुलसी की बीजों का नियमित इस्तेमाल इन दोनों बीमारियों को दूर कर देता है।

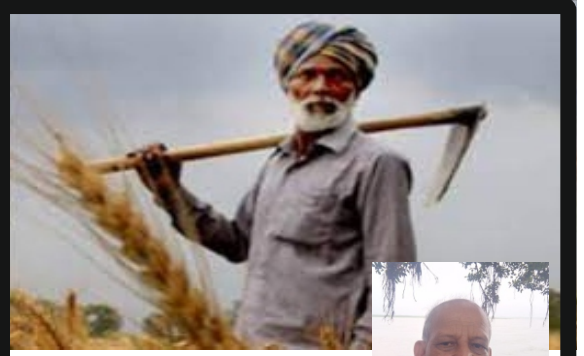
साँप के काटे का इलाज है तुलसी, अगर किसी को साँप ने काट लिया है, तो पीड़ित व्यक्ति को तुरन्त तुलसी खिलानी चाहिए। ऐसा करने से उसकी जान बच सकती है। इसके साथ ही जिस स्थान पर साँप ने काटा हो, उस पर तुलसी की जड़ को मक्खन या घी में घिसकर लेप कर देना चाहिए। जैसे-जैसे जहर खिंचता चला जाता है, इस लेप का रंग सफेद से काला हो जाता है और आदमी की जान बच जाती है। तुलसी के सेवन में रखें ये सावधानी तुलसी के पत्तों में पारा मरकरी होता है। इसलिए इसे कभी भी दाँतों से चबाकर

नहीं खाया जाता, अन्यथा सारे दौंत कुछ ही महीनों में खराब होकर टूट जाएंगे। साथ ही इसकी तासीर भी गर्म होती है। अतः गर्म प्रवृत्ति वाले लोगों को भी तुलसी का सेवन संभल कर ही करना चाहिए।

गर्भावस्था में तुलसी के पत्ते खाने के फायदे:-
एनिमिया के खतरे को कम करने में मददगार गर्भावस्था में एनिमिया होने का खतरा बढ़ जाता है। जिन महिलाओं को गर्भावस्था में खून की कमी हो जाती है उन्हें कई दूसरी समस्याएं भी होने का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में हर रोज तुलसी की कुछ पत्तियों के सेवन से इस खतरे को कम किया जा सकता है। ये लाल रक्त कणिकाओं को बढ़ाने का काम करता है। थकान दूर करने में मददगार गर्भावस्था में थकान महसूस होना एक सामान्य बात है। इस दौरान तुलसी की पत्तियों के सेवन से ऊर्जा मिलती है और सुबह आने वाले चक्कर और कमजोरी में फायदा होता है।

विटामिन के का अच्छा माध्यम तुलसी के पत्तों में भरपूर मात्रा में विटामिन के पाया जाता है। विटामिन के रक्त का थक्का जमाने में सहायक होता है। भ्रूण के विकास में सहायक गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए तुलसी काफी फायदेमंद है। इसमें मौजूद विटामिन ए बच्चे के विकास के लिए एक आवश्यक तत्व है। ये तंत्रिका तंत्र के विकास में भी महत्वपूर्ण है। संक्रमण रोगों से सुरक्षा गर्भावस्था में कई तरह की बीमारियों के होने का खतरा बना रहता है। इस दौरान तुलसी के पत्तों के सेवन से कई तरह की संक्रमक बीमारियों के होने का खतरा कम हो जाता है। गर्भावस्था में तुलसी का सेवन करना बहुत फायदेमंद है। ये एक सुपरफूड के साथ औषधिक भी है। □

पता : जी0 एफ0-1, पशुपालन कालोनी,
बादशाहबाग, फैजाबाद रोड,
लखनऊ-226007.
मो0 : 9956696645



बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'



किसान

खड़ी फसल गेहूं की
देख कर खुश था बहुत किसान।
अन्न से भर जाएगा घर
सोच सोच खुश था किसान।

मगर उसे क्या पता थी
बिजली की एक चिंगारी गजब ढाएगी
खड़ी फसल में चिंगारी से
भीषण आग लग जाएगी।

धू-धू कर खेत जल रहा था,
सर पीट-पीट कर किसान रो रहा था।
उसकी सारी मेहनत की कमाई,
राख होते देख रहा था।

सारी फसल किसान की
पल भर में बर्बाद हो गई।
कुदरत को मंजूर था जो
बात वही सच हो गई।

कभी बाढ़ कभी सूखा
कहर किसान पर ढाता।
हर दुख सहकर किसान
फिर भी है मुस्काता।



□□

पता : गल्ला मंडी, गोला बाजार-273408
गोरखपुर, उ.प्र.
मोबाइल : 9838911836



नारियल पानी में छिपा है स्वास्थ्य का खजाना

गर्मी के दिनों में ठंडक और तरावट देने के लिए नारियल पानी खूब पिया जाता है। धूप की तपिश में नारियल पानी केवल शीतलता ही नहीं देता, इसके अद्भुत पोषक तत्वों के साथ सेहत के लिए भी बहुत लाभकारी है। नारियल पानी में मौजूद साधारण शुगर, इलेक्ट्रोलाइट और मिनरल्स शरीर में पानी की कमी को दूर करता है। एक शोध में यह साबित हुआ है कि नारियल पानी में मौजूद साइटोकिनीन्स में एंटी एजिंग, एंटी कार्सिनोनेनिन और एंटी-थ्रोमबोटिक गुण मौजूद होते हैं। डायरिया के मरीजों को पानी की कमी दूर करने के लिए नारियल पानी पीने की सलाह दी जाती है। अक्सर डायरिया के मरीजों को ओआरएस का घोल पीने की सलाह दी जाती है पर नारियल पानी ऐसे मरीजों के लिए फायदेमंद ही होता है। इसमें मौजूद एमिनो एसिड, एनजाइम, मिनरल्स और फैटी एसिड इसे हाई ओसमोलारिटी गुण वाले पानी बनाते हैं।



श्रीमती दीप माला सिंह
एम०ए० शिक्षा शास्त्र, बी०एड०

हरे नारियल पानी में प्रचुर मात्रा में इलेक्ट्रोलाइट मौजूद होता है। 100 मिली लीटर पानी में 250 मिलीग्राम पोटेशियम और 105 मिली ग्राम सोडियम मौजूद होता है, जो डायरिया में होने वाले पानी की भरपाई करता है।

हमेशा ताजा नारियल का पानी ही शरीर के लिए लाभदायक होता है। नारियल पानी न सिर्फ पाचन क्रिया को ठीक करता है बल्कि खूबसूरती



निखारने में भी मदद करता है। नारियल पानी में मौजूद वायोएक्टिव एंजाइम जैसे एसिड फॉस्फेट, कैटलैज, डिहाइड्रोजिनेज, पैरोक्सिडेज, आरएनए-पोलि मेरेजेज हमारे शरीर की पाचन क्रिया और मेटाबोलिज्म को सही रखते हैं। नारियल पानी में मौजूद खनिज तत्व जैसे कैल्शियम, आयरन, मैग्नीज, मैग्नेशियम और जिंक इसे दूसरे फलों से बेहतर बनाते हैं। नारियल पानी बी-काम्प्लेक्स और फोलेट्स का अच्छा स्रोत है। यह विटामिन हमारे शरीर की अंदरूनी क्षतिपूर्ति की बाहर से भरपाई करता है।

प्रकृति ने हमें नारियल पानी के रूप में तरोताजा कर देने वाले बेहतरीन पेय दिये हैं, जिसे पूरी दुनिया में लोग इसके पौष्टिक और स्वास्थ्य गुण के कारण पीते हैं। कच्चे नारियल का पानी सेहत के लिए लाभदायक है, पर इसका सेवन नारियल खोलने के बाद जल्द ही कर लें। अगर नारियल पानी स्टोर करना है तो इसे खोले नहीं बल्कि बन्द रखकर फ्रीज में या बाहर रखें। जब इसे पीना हो तभी खोलें। नारियल की तासीर ठंडी होती है। नारियल का पानी, हल्का, प्यास बुझाने वाला अग्नि प्रदीपक, वीर्यबर्धक तथा मूत्र संस्थान के लिए बहुत उपयोगी होता है। सूखे नारियल से तेल निकाला जाता है। इस तेल की मालिश त्वचा तथा बालों के लिए बहुत अच्छी होती है। नारियल तेल की मालिश से मस्तिष्क भी ठंडा रहता है। गर्मी में लगने वाले दस्तों में एक कप नारियल पानी में पिसा जीरा मिलाकर पिलाने से दस्तों में तुरन्त आराम मिलता है। बुखार के कारण बार-बार लगने वाली प्यास के इलाज के लिए नारियल की जटा को जलाकर गर्म पानी में डालकर रख दें। जब यह पानी ठंडा हो जाय तो

छानकर इसे रोगी को पीने के लिए दें। इससे प्यास मिटती है। नारियल के पानी में खीरे का रस मिलाकर लगाने से मुहांसों से रक्षा होती है। नारियल के सेवन से रक्त विकार का नाश होता है। खाज-खुजली में नारियल का तेल लाभकारी होता है। नारियल का पानी चिकनगुनिया की रोकथाम में भी सहायक है। यह स्वाद और सेहत का संगम है तथा कुदरत का अनमोल खजाना है।

नारियल का पानी पोषक तत्वों का पावर हाउस है। नारियल का पानी पूरे शरीर के लिए फायदेमन्द है। इसमें कैलोरी बेहद कम होती है। 100 ग्राम नारियल पानी में सिर्फ 19 कैलोरी होती है। इसमें कुछ अमीनो एसिड और 4 ग्राम कार्बोहाइड्रेट होता है। इसमें 95 फीसदी पानी होता है और 1 ग्राम से कम फैट होता है। फैट फ्री नारियल पानी का सेवन दिल को सेहतमंद रखता है और वजन को कम करता है। नारियल में फैट होता है लेकिन उसका पानी फैट फ्री होता है। नारियल का पानी पीने से दिल के रोगों से बचाव होता है। हार्ट के मरीज भी नारियल पानी का सेवन करें, दिल की सेहत दुरुस्त रहेगी। नारियल पानी में 95 फीसदी पानी होता है इसमें पोटेशियम ज्यादा होता है जो कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करता है। किडनी की पथरी से बचाव करने के लिए नारियल पानी का सेवन बेहद उपयोगी है। नारियल पानी शरीर को हाइड्रेट रखता है और किडनी की सेहत को ठीक करता है। एक कप नारियल पानी में 600 मिलीग्राम पोटेशियम मिलता है जिससे किडनी स्वस्थ रहती है और किडनी स्टोन का उपचार होता है। नारियल पानी बालों को पोषण देता है। नारियल पानी पीने से डायबिटीज कन्ट्रोल रहती है। नारियल पानी का सेवन करने से मोटापा में वृद्धि नहीं होती है। इसका सेवन करने से पेट लम्बे समय तक भरा रहता है और भूख नियंत्रित रहती है। वजन घटाने के लिए नारियल पानी का सेवन बेहद उपयोगी है। □

पता : एस-2/376 ए-12, सिकरौल,
भोजवीर वाराणसी, उ0प्र0।
पिन-221002



- हरी राम यादव फैजाबादी
भूतपूर्व सैनिक / स्वतंत्र लेखक



जरूर करिहा मतदान

सुना अपने देशवा के,
गरीब गुरबा अउर किसान।
मतदान के दिन करिहा,
जरूर भइया मतदान।

जात जात याद रखिहा,
भइया अपने गउंवा के हाल।
वकरे संग ही मा देख लिहा,
चूल्हा पै कैसे चढ़ी दाल।

अधिकार के प्रयोग करा,
लगावा अगुंरी पै स्याही।
एक दिन के है मेला,
न करिहा भइया कोताही।

मत के तोहरे असीमित कीमत,
मत के दिहा तू मत दान।
बढ़ि जाई तोहरे एक मत से,
जन के तंत्र के बड़ा सम्मान ॥

याद रखिहा आगे के दिन,
और अपने बच्चन के सम्मान।
पढ़ाई लिखाई और दवाई,
और याद रखिहा तू वर्तमान।



पता : सतगुरु पुरम कालोनी
चरन भट्टा रोड, निकट एस.जी.पी.जी.आई., लखनऊ
मो. -7087815074

ईमेल-hariram1511@gmail.com



शहद और स्वास्थ्य



श्रीमती कुसुम सिंह
(शिक्षिका)

वाराणसी पब्लिक स्कूल केराकतपुर, लोहता,
वाराणसी, उ०प्र०

प्रकृति अपार सम्पदाओं का भण्डार है। इन सम्पदाओं का उपयोग मनुष्य ने शरीर को सुदृढ़ बनाने में, अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने में रोगों के उपचार में किया और आज भी करते आ रहे हैं। सम्पदाओं का प्रभाव स्थायी और लाभकारी होता है। इस कारण इन सम्पदाओं का उपयोग किया जा रहा है। शहद भी प्रकृति की सम्पदा है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में शहद का विशेष महत्व है। आयुर्वेद के प्राचीनतम ग्रन्थ 'चरक संहिता' में शहद के गुणों को बतलाया गया है। शरीर को स्वस्थ और कान्तिमय बनाने में शहद का विशेष योगदान है। शहद रोगों से रक्षा करता है। इतना ही नहीं रोगों को समाप्त भी करता है। आयुर्वेद में शहद का विशेष महत्व है। वैज्ञानिकों का मानना है कि शहद के नियमित सेवन से शरीर को शक्ति, स्फूर्ति, उत्साह एवं ताजगी मिलती है। इतना ही नहीं रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता है। शहद उत्तम पौष्टिक आहार है। इसका सेवन सबको करना चाहिए। शहद के रासायनिक विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शहद में कार्बोहाइड्रेट में ग्लूकोज, फ्रुक्टोज, माल्टोज, डेक्स्ट्रिन, विटामिन में ABC, लवण में सोडियम, कैल्शियम, मैग्नीज, लोहा, ताँबा, फास्फोरस, सिलिका, आयोडिन, गन्धक पाये जाते हैं। इन अवयवों की उपस्थिति से स्पष्ट है कि शहद पूर्ण आहार है।

शहद जहाँ एक ओर पौष्टिक आहार है, वहीं दूसरी ओर औषधीय गुणों को प्रदर्शित करता है। इस कारण शहद की उपयोगिता और महत्व बढ़ गया है। धूप में भागदौड़ से, काम की अधिकता से जब थकान महसूस हो, तब नींबू के रस में शहद मिलाकर पीने से थकावट समाप्त हो जाती है और ताजगी आ जाती है मन प्रफुल्लित होकर काम करने की शक्ति आ जाती है।

मौसम परिवर्तन में- सर्दी-जुकाम-खाँसी होना स्वाभाविक है। यदि जुकाम खाँसी पर शुरू में ही ध्यान न दिया जाय तो बहुत ही कष्टकारी साबित होता है। परिणामस्वरूप अन्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं। तभी कहावत है कि 'लड़ाई का घर हॉसी, रोग का घर खाँसी, खाँसी होने पर शीतोफलादि चूर्ण को शहद के साथ सुबह, दोपहर एवं शाम को लेने से लाभ मिलता है।

शहद श्वसन तन्त्र, दमा, स्नायु तन्त्र की दुर्बलता को समाप्त करता है। पाचन तन्त्र सम्बन्धी विकारों को दूर करने में शहद का सेवन उपयोगी



होता है। साथ ही शहद रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है जिससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। जल जाने पर जले हुए भाग पर शहद लगाने से जलन कम होती है। साथ ही फफोले भी नहीं पड़ते हैं। टूटी हड्डियों को जोड़ने में शहद सहायता करता है। चूना एवं कच्ची हल्दी को शहद में मिलाकर टूटी हड्डि या मोच पर लेप कर दें। 3-4 घण्टे तक लेप लगा रहने दें। फिर हटा दें। सूजन कम हो जाती है। दर्द कम हो जाता है। लाभ मिलता है। सुबह-रात्रि में 10 ग्राम शहद नियमित लेने से ब्रोन्कायटिस, नीमोनिया, टायफाइड रोगों के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। साथ ही रक्त की मात्रा भी बढ़ती है। इससे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। यह रोग-प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि करती है।

शहद से लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि शहद प्राकृतिक और शुद्ध हो। कृत्रिम और अशुद्ध शहद हानिकारक होता है। शहद में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट दिल के लिए बहुत फायदेमन्द होता है। यह दिल से जुड़ी कई तरह की बीमारियों से बचाव करता है। शहद के प्रयोग से इम्युनिटी पावर मजबूत होने से विभिन्न प्रकार के संक्रामक बीमारियों से बचाव होता है। शहद और गुनगुने पानी का मिश्रण खून में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ाता है

जिससे एनीमिया या खून की कमी की स्थिति में लाभ होता है। अधिक मात्रा में शहद लेने से दस्त या पेट दर्द होने की सम्भावना बनी रहती है। अतः हानिप्रद है। शहद को आग पर गर्म नहीं करना चाहिए। शहद और घी का सेवन एक साथ नहीं करना चाहिए। शहद की मात्रा का सेवन उम्र के अनुसार करना चाहिए। बच्चों के लिए 4-5 ग्राम, किशोरों के लिए 7-8 ग्राम, युवकों के लिए 12-15 ग्राम, वृद्धों के लिए 20-25 ग्राम सेवन करना चाहिए।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि शहद सर्वोत्तम आहार है। शहद का सेवन नियमित एवं समुचित मात्रा में करने पर चतुर्विध लाभ मिलता है। इससे शरीर को बल स्फूर्ति भी मिलती है। अच्छा स्वास्थ्य जीवन में उमंग, उत्साह, उल्लास, प्रफुल्लता, आनन्द एवं सुख प्रदान करता है। शरीर में उत्साह का संचार होता है जिससे कठिन परिश्रम करने की इच्छा होती है। स्वास्थ्य ही धन है। ●

पता : मकान नं० 24,

अयोध्या धाम कालोनी,

लक्ष्मणपुर, शिवपुर, वाराणसी, उ०प्र०

पिन : 221003

मो० : 8840218049



सतीश 'बब्बा'

बेटी

खुशनसीब हूं
बाप बना हूं
में बेटी का बाप हूं
देख उसे मैं खुश हूं!

नन्हें पग वह चलती थी,
घर - आंगन में खुशियां थी,
घांघरिया कम पैसों की,
लाता ऊसको खुश होती थी!

बड़ी हुई तो उसे क्या कहूं,
पूरा ख्याल मेरा रखती थी,
मेरी बण्डी फटी देखकर,
एक वही चिंता करती थी!

कुर्ती नहीं लाना मुझे बापू,
अपने को बण्डी ले लेना बापू,
मेरी कुर्ती अभी फटी नहीं है,
अपने को गमछा ले लेना बापू!

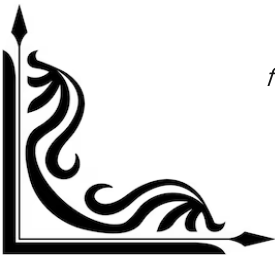
कैसे बताऊं मैं बेटी तुझको,
तू इज्जत है मेरी बिटिया,
में फटे में रहकर भी खुश हूं,
कुर्ती लाऊं मैं नई जो तुझको!

बिदा हो गई मेरे घर से बेटी,
दोहरी चिंता करती है बेटी,
मायके की भी खबर है रखती,
मर्यादा का नाम है बेटी!!



पता -

सतीश चन्द्र मिश्र, ग्राम पोस्ट आफिस-कोबरा,
जिला - चित्रकूट, उत्तर - प्रदेश, पिनकोड - 210208.
मोबाइल - 9451048508, 9369255051.
ई मेल - babbasateesh@gmail.com



सनातन संस्कृति की अनुपम देन अग्निहोत्र कृषि

भारतवर्ष में अभी भी काफी अधिक संख्या में लोग गरीबी और भुखमरी से ग्रस्त हैं। साथ ही जनसंख्या दिनों दिन तीव्र गति से बढ़ रही है। इसलिए कृषि एवं उससे सम्बन्धित उद्योगों पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। जनसंख्या की वृद्धि के साथ खाद्यान्नों की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाने के निरन्तर प्रयास होने चाहिए। लोगों की आय बढ़ने पर अनाज के साथ फल, सब्जियों, दूध, मछली आदि पोषणीय आहार की माँग बढ़ेगी। अतः यह नितान्त आवश्यक है कि कृषि एवं सम्बन्धित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाये। हमें मजबूत प्रतियोगी विविधकृत एवं पोषणीय कृषि क्षेत्र की आवश्यकता है। भारत में औद्योगिक विकास के लिए कृषि का बहुत अधिक महत्व है क्योंकि हमारे कुछ



अखिलेश सिंह चन्देल

डायरेक्टर

तालुकदार कृषक फारमर्स प्रोड्यूसर्स कम्पनी लि.

उद्योगों को कच्चा माल और औद्योगिक क्षेत्र में लगे हुए लोगों का अनाज भी कृषि से मिलता है। ग्रामीण



क्षेत्र औद्योगिक विकास के लिए भी कृषि-क्षेत्र का विकास जरूरी है। निर्यात में भी कृषि-क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। अग्निहोत्र कृषि द्वारा भारतीय किसानों के सर्वांगीण विकास की प्रबल सम्भावना है। पर्यावरण शुद्धि व जलवायु नियन्त्रण के सिद्धान्तों पर आधारित वैदिक कृषि पद्धति हमारी देव संस्कृति के क्रांतिदर्शी ऋषियों के ऐसे उत्कृष्ट चिन्तन का परिणाम है जिसका आज भी कोई सानी नहीं है। खेती की वैदिक पद्धति भारत की ऋषि संस्कृति का मानव समुदाय को दिया गया। ऐसा अनूठा उपहार है जिसकी उपयोगिता उस युग की तुलना में आज कई गुना अधिक है। प्रयोगों और प्रमाणों की कसौटी पर कसकर इस विधा को आधुनिक कृषि विज्ञानी भी स्वीकार कर चुके हैं। अग्निहोत्र कृषि की वैदिक पद्धति को वर्तमान में प्रकाश में लाने का श्रेय जाता है। महाराष्ट्र के विख्यात संत स्व० गजानन महाराज को जिन्होंने वेदों का गहन अध्ययन कर मानव समाज के समग्र हित में इस पद्धति को न सिर्फ खोज निकाला वरन् इसका प्रयोग कर अपने क्षेत्र के कृषकों को बड़े पैमाने पर उत्तम कृषि के लिए प्रेरित किया। रासायनिक उर्वरकों के दुष्प्रभावों को देखते हुए देश के प्रगतिशील कृषकों का रुझान पुनः तेजी से कृषि की इस पद्धति की ओर बढ़ रहा है।

अग्निहोत्र कृषि पद्धति से उत्पादित फसल गुणवत्ता की दृष्टि से तो बेहतर होती ही है, भूमि की उर्वरा शक्ति भी इससे बरकरार रहती है। साथ ही पर्यावरण को संरक्षित करके इसके द्वारा ईको सिस्टम (पारिस्थितिकी) तन्त्र का सन्तुलन भी बरकरार रखा जा सकता है। जैविक कृषि के इन बहुआयामी लाभों को देखते हुए आधुनिक कृषि वैज्ञानिक इसके प्रचार-प्रसार की ओर विशेष ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। जैविक कृषि में परम्परागत फसलों जैसे- रबी, खरीफ और दलहन की पैदावार के साथ-साथ फलों, साग-सब्जियों, औषधीय पौधों व फूलों की खेती आदि में बेहतर परिणाम सामने आये हैं। कृषि क्षेत्र में नियमित अग्निहोत्र के साथ नेडप कम्पोस्ट (गोबर व जैविक कचरे से बनी खाद) व वर्मी कम्पोस्ट (केंचुआ खाद) के प्रयोग से फसल की

गुणवत्ता तो बढ़ती ही है, पैदावार भी अच्छी होती है।

आचार्य नरेन्द्रदेव कृषि विश्वविद्यालय कुमारगंज, फैजाबाद के सस्य विज्ञान के विभागाध्यक्ष एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ० अनिल कुमार सिंह के अनुसार नियमित अग्निहोत्र करने से कृषि प्रक्षेत्र व यज्ञ करने वाले व्यक्ति के चारों ओर एक विशिष्ट वातावरण 'औरा' का निर्माण होता है जिसके प्रभाव से आस-पास की नकारात्मक शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। इससे मनुष्य व पशुओं दोनों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और कृषि उर्वरता का अद्भुत विकास होता है। कृषि भूमि में नियमित अग्निहोत्र करने व यज्ञ भस्म का छिड़काव करने से भूमि की उर्वरा शक्ति में गुणात्मक सुधार देखा गया है।

अग्निहोत्र कृषि का मूल सिद्धान्त

केमिकल युक्त खेती की जगह अग्निहोत्र कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है। इस विधि द्वारा सुबह शाम आहुति देकर वातावरण को शुद्ध किया जाता है। इसी यज्ञ की राख में गाय का गोबर और गौमूत्र मिलाकर खाद तैयार की जाती है जो खेती में प्रयोग किया जाता है। अनादि काल से यज्ञ और हवन के माध्यम से तन, मन और वातावरण का शुद्धिकरण करना वेद और पुराण भी बताते हैं वहीं आज जब वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है तो ऐसे में एक बार फिर से पुरानी संस्कृति को जीवित किया जा रहा है। यज्ञ और हवन के माध्यम से न सिर्फ वातावरण को शुद्ध किया जाता है बल्कि इसके माध्यम से कृषि क्षेत्र को भी आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। आज लोग जागरूक होने के साथ आर्गेनिक खेती की ओर बढ़ रहे हैं।

अग्निहोत्र हवन करने के बाद जो राख (भस्म) बचती है, उसका इस्तेमाल खेती करने के लिए होता है, साथ ही खेत में अग्निहोत्र हवन करने से शुद्ध वातावरण का घनत्व बढ़ता है जिससे फसल में आपको आश्चर्यचकित करने वाले परिणाम दिखेंगे। इस पद्धति में बुवाई से कटाई तक खेत में अग्निहोत्र करना होता है। अग्निहोत्र एक छोटे से ताँबे के बर्तन में अग्नि के पिरामिड को प्रज्वलित करने तथा सूर्यास्त और सूर्योदय के समय दो मन्त्रों के

उच्चारण के साथ इस अग्नि पर घी और चावल की आहुति देने का सरल वैदिक अनुष्ठान है। अग्निहोत्र कृषि पूर्ण प्रकट विज्ञान है। अग्निहोत्र एक यज्ञ है जो सूर्योदय और सूर्यास्त के समय किया जाता है, इसकी जड़ें संस्कृत भाषा में हैं जहाँ अग्नि का अर्थ आग है और होत्र का अर्थ भगवान को अर्पित करना है। अग्निहोत्र एक प्रकार का वैदिक यज्ञ है। इस यज्ञ का वर्णन यजुर्वेद में मिलता है, इस यज्ञ को रोज सुबह और शाम में करने का विधान है। अग्निहोत्र यज्ञ करने से सुख शांति की अनुभूति होती है। स्वास्थ्य बेहतर होता है साथ ही पर्यावरण शुद्ध होता है। इस यज्ञ को लेकर सबसे खास बात यह है कि अग्निहोत्र यज्ञ करने वाले के घर में सदैव अग्नि प्रज्वलित होती रहती है। वह इसी आग में तैयार भोजन का सेवन करते हैं। इस कृषि का अभिप्राय अग्नि द्वारा व्यक्ति, कृषि प्रक्षेत्र व वायुमण्डल को पवित्र करने की प्रक्रिया से है। इस प्रक्रिया द्वारा वायुमण्डल एवं वातावरण में प्रकृति की स्वाभाविक शक्तियों, ज्योति व संयोजनों एवं मन्त्र शक्ति से ऐसे परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है जिससे सूर्य और चन्द्रमा से प्राप्त होने वाली उच्च शक्ति से ऐसे परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है जिससे सूर्य और चन्द्रमा से प्राप्त होने वाली उच्च शक्ति युक्त ब्रह्माण्डीय ऊर्जा को और अच्छे ढंग से ग्रहण किया जा सके। यह प्रक्रिया पृथ्वी के ऊर्जा चक्र को इस प्रकार नियंत्रित करती है, जिससे यह ऊर्जा प्रकृति के अनुरूप प्राणी मात्र के कल्याण के लिए सकारात्मक दिशा में प्रवाहित होती रहे।

यज्ञाहुति देने की विधि

एक ताम्र पात्र में से अक्षत के कुछ दाने बायीं हथेली में लेकर गाय के घी की कुछ बूँदें उस पर छिड़ककर अच्छी प्रकार मिलाकर ठीक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय निर्धारित मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रज्वलित अग्नि में श्रद्धाभाव के साथ दो-दो आहुतियाँ अर्पित की जाती हैं।

सूर्योदय का मन्त्र

ॐ सूर्याय स्वाहा इदम् सूर्याय इदम् न मम्
(पहली आहुति अर्पित करें)।

ॐ प्रजापतये स्वाहा

इदम् प्रजापतये इदम् न मम्
(दूसरी आहुति अर्पित करें)।

सूर्यास्त का मन्त्र

ॐ अग्नये इदम् न मम्
(पहली आहुति अर्पित करें)।

ॐ प्रजापतये स्वाहा

इदम् प्रजापतये इदम् न मम्
(दूसरी आहुति अर्पित करें)।

इस अग्निहोत्र में समय की पाबन्दी का विशेष महत्व है। आहुति देने के बाद लौ बुझने तक शांत चित्त भाव से बैठे रहना चाहिए तथा अग्निहोत्र भस्म को अगले दिन एकत्रित कर मिट्टी के पात्र में एकत्र कर लेना चाहिए। अग्निहोत्र कृषि में संधिकालों का अत्यधिक महत्व है। प्रयोगों में पाया गया है कि नियमित अग्निहोत्र से कृषि प्रक्षेत्र पर उगायी जा रही फसलें, पशु तथा निवास कर रहे व्यक्ति के स्वास्थ्य में सुधार, स्थान विशेष में प्रदूषण की कमी, फसल उत्पादन में आशातीत बढ़ोतरी तथा खरपतवार तथा हानिकारक कीटों एवं व्याधियों का संक्रमण कम होता जाता है। साथ ही अग्निहोत्र के ताम्रपात्र में जलती हुई अग्नि एवं मंत्रोच्चारण से उत्पन्न प्रतिध्वनि से वातावरण पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जिससे कि पौधों की कोशिकाओं, मानव एवं प्राणिमात्र को नयी जीवनशक्ति मिलती है। साथ ही अग्निहोत्र की भस्म (राख) का प्रयोग कीटनाशक व फसल के ऊतक संकुचन प्रभावों को उत्पन्न करने में कारगर होता है। फार्म प्रक्षेत्र पर यदि किसी कारणवश नियमित रूप से अग्निहोत्र न हो सके तो 1 किलोग्राम यज्ञ भस्म का प्रयोग अनाज तथा दलहनों के भण्डारण हेतु भी किया जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि खेती की वैदिक पद्धति भारत की ऋषि संस्कृति का मानव समुदाय को दिया गया अनूठा उपहार है। □

पता : मकान नं0 24,
अयोध्याधाम कालोनी,
लक्ष्मणपुर, शिवपुर, वाराणसी
पिन-221003
मो0 : 7068991602

गरीब घर की लड़कियाँ...

लड़कियाँ होना तो वैसे भी
हमारे भारतीय समाज में
अभिशाप माना जाता है
लड़कियों को गर्भ में पलने के पहले ही
प्रायः मार दिया जाता है
उस पर भी यदि लड़की ने
किसी गरीब घर में जन्म लिया
तो उसने निश्चित ही
सिद्ध महात्मा का श्राप पा लिया
माँ का जब दूसरे के घर
चौका बरतन करने जाना
तो उसे भी साथ में जाकर
काम में हाथ बटाना है...

गरीब घर में जन्म लेने वाली लड़कियों के
पढ़ने-लिखने के सपने न होते हैं पूरे
बमुश्किल सरकारी प्राइमरी स्कूल में
पॉचवीं आठवीं के बाद आगे की
शिक्षा के सपने अक्सर रह जाते हैं अधूरे
ये लड़कियाँ भी चाहती हैं उड़ना
ख्वाबों को चाहती हैं पूरा करना
पर उन्हें डांट-डपट कर बता दी जाती हैं
उनकी पढ़ने और उड़ने की सीमाएँ
ऐसे हजारों-लाखों गरीब लड़कियों की
मृतप्राय हो जाती हैं अभिलाषाएँ
शादी के बाद तुमको चूल्हा-चौका ही करना है
पढ़-लिखकर कहाँ तुमको डाक्टर, इंजीनियर
या कलेक्टर बनना है...

गरीब घर की लड़कियों को
खेलने, कूदने, चहकने की उम्र में
डाल दी जाती है पैरों में
काम के जंजीरों की बेड़ियाँ



● लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

घर व बाहर के कामों की जिम्मेदारियाँ
चौका-बेलन, कटाई-दवाई, झाड़ू-बुहारु
कंडा-गोबर और न जाने क्या-क्या कितने काम
चहकने-फुदकने के आयु में ही
प्रायः कर दी जाती है उनकी शादी
सृष्टि से मिले सुंदर बचपन की
सचमुच जैसे हो जाती है बर्बादी
क्या समता का दंभ भरने वाला
हमारा समाज और ऐसे माता-पिता
इस पर करेगा जरा-सा विचार
ऐसी गरीब घर में जन्म लेने वाली
लड़कियों पर करेगा उपकार
उन्हें भी अपना मिलेगा अधिकार
क्या उनके उड़ने के सपने होंगे साकार
खुशियों से बचपन साकार करने का
उन्हें मिलेगा पुरस्कार
या सिर्फ मंचों के भाषणों तक
लड़कियों के उड़ान भरने और
सुत-सुता में समानता लाने की
होती रहेगी जय-जयकार...



मोहल्ला- बरगदवा (नई बस्ती),
निकट गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट-मड़वा नगर (पुरानी बस्ती),
जिला-बस्ती 272002 (उ.प्र.)
मोबाइल : 7355309428



धूप का चश्मा

आँखों की सुरक्षा-व्यक्तित्व का निखार

धूप का चश्मा लगाना कोरा फैशन नहीं है। विशेष रूप से गर्मियों के मौसम में तेज धूप तथा धूल से आँखों की सुरक्षा के लिए चश्मा लगाना आवश्यक है। परन्तु चश्मा चुनते वक्त अपने चेहरे का आकार व शरीर की रंगत को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। एक उपयुक्त चश्मा जहाँ आपका व्यक्तित्व निखार सकता है वहीं बेमेल चश्मा आपके व्यक्तित्व को हास्यास्पद भी बना सकता है।

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है शरीर में शिथिलता आने लगती है। हाल-बेहाल हो जाता है। सारा मेकअप पलभर में मिट जाता है। बाहर सड़क पर आना और चलना मुश्किल हो जाता है। आँखें खोले नहीं खुलती। धूप की प्रचण्डता का कहना इतना कि आप ढंग से किसी से बात भी नहीं कर सकते और फिर काम पर तो जाना ही है। ऑफिस भी जायेंगे, किसी से मिलेंगे भी अथवा शॉपिंग भी करेंगे ही। अब बताइये यदि आँखों की रक्षा का इंतजाम नहीं किया तो वे बीमार नहीं हो जाएंगे? आँखों को शीतलता प्रदान करना गर्मी की पहली जरूरत है। गर्मी में घर से जहाँ खाली पेट नहीं निकलना



- चन्द्रकान्ता शर्मा

चाहिए, वहीं बगैर धूप का चश्मा लगाए निकलना भी कम खतरनाक नहीं है।

धूप का चश्मा आँखों की रक्षा का सुरक्षित उपाय है, बशर्ते कि चश्मा समुचित रूप से जाँचा-परखा गया हो। इससे जहाँ आँखों को इस भीषण धूप में राहत और ठण्डक मिलेगी, वहीं यह आपके व्यक्तित्व में चार चाँद भी लगायेगा। चश्मा लगने से पहले अपने चेहरे के अनुसार ही उसका फ्रेम देखना न भूलें। कई बार छोटे चेहरे पर बड़े फ्रेम के चश्मे भी हास्यास्पद लगते हैं। इसलिए चेहरे की बनावट के अनुसार ही चश्मा लेना चाहिए। मसलन चौड़े-चौकोर

चेहरे पर बड़े फ्रेम का चश्मा व्यक्तित्व को निखार देता है, वहीं गेल-चपटे व कमजोर चेहरे को विदूष बना सकता है। पहले दूकान पर भली प्रकार से दर्पण में देखकर जान लें कि धूप का चश्मा आपके व्यक्तित्व पर फहब रहा है या नहीं? जहाँ तक चश्मे के काँच का प्रश्न है, यह भी चेहरे के मुताबिक ही लेने चाहिए। साथ ही इसमें आपकी निजी पसन्द भी निर्भर करती है। गहरे, काले, हरे व नीले चश्मों का प्रचलन बढ़ गया है तथा हल्के रंगीन काँच के चश्मे ज्यादा पसन्द किये जा रहे हैं।

इसमें से आपकी आँखें भी दिखाई देती हैं तथा किसी से बातचीत करते समय चश्मा उतारने की आवश्यकता भी नहीं रहती है।

धूप के चश्मे में जहाँ फ्रेम की मजबूती व कलात्मकता महत्त्व रखती है, वहीं उसमें काँच की क्वालिटी को भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। सस्ते व हल्के काँच जहाँ आँखों के लिये हानिप्रद होते हैं, वहीं वे जल्दी टूट व तड़क भी जाते हैं उनमें देखना भी स्पष्टता से सम्भव नहीं होता। इसलि, उत्तम श्रेष्ठ श्रेणी के काँच चश्मे को उम्र देंगे, वहीं आँखों को नुकसान न देकर दूर तक देखने की दृष्टि भी देंगे तथा आपके व्यक्तित्व को और अधिक निखारेंगे। इन काँचों के कारण आँखों में शीतलता बनी रहती है तथा आँखों की बीमारियों से भी बचा जा सकता है। वरना धूलकण तथा धूप की तेजी आँख जैसे कोमल अंग पर बहुत जल्दी अपना दुष्प्रभाव छोड़ देती है। फिर आप चाहे भरी धूप में शॉपिंग को जायें, या किसी से मिलने, कठिनाई होगी।

धूप का चश्मा आँखों तक ही लाभ नहीं देता अपितु कपोलों पर होने वाले धूप के प्रभाव से भी बचाता है। धूप की तेजी से यह चेहरे की त्वचा को जलने नहीं देता तथा पसीने को थामे रखता है।



यदि आपको पहले ही नजर का चश्मा लग हुआ है तो आजकल इस पर ही धूप का चश्मा फिट हो जाता है, जो चलते समय लग लें तथा काम करते समय इसके ग्लासेज को ऊपर करके काम किया जा सकता है। इससे किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती तथा आराम से लगया जा सकता है।

धूप का चश्मा प्रखर धूप की आवश्यकता है कोई फैशन अथवा दिखावा नहीं है। यदि फैशन हो भी जाता है तो जमाने के साथ कदम मिलाकर चलना ही समय की चाल मानी गई है, इसलिए इस फैशन को अपना लेना अनुचित नहीं है। धूप के रंगीन चश्मे सस्ते-महंगे दोनों ही प्रकार के मिलते हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप कौनसा खरीदना चाहेंगे। बस खरीदते समय उत्तम क्वालिटी और चेहरे के अनुकूल चश्मा लेना आपकी खुद की समझदारी पर निर्भर करता है। □□

पता : 124/61-62, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020 (राजस्थान)
सम्पर्क : 09828024500

इष्ट का सहारा

तुम्हारे भोग जितने कम होंगे
दुःख, कष्ट व परेशानियां उतनी
ही कम होंगी ।
अपने धर्म के रास्ते पर
चलकर ही सफलता मिलती है
किसान, छात्र, व्यापारी, नौकरीपेशा अन्य
सब अपना धर्म निभाते हैं
तब ही फल व उपहार पाते हैं ।
धर्म छोड़कर विकास दिखाई तो देगा
परंतु वो विकास कब विनाश में परिवर्तित
हो जायेगा पता ही नहीं चलेगा ।
कर्म व फल एक ही सिक्के के
दो पहलू हैं
एक दिन दोनों ही सामने आते हैं
अच्छे कर्म-अच्छा फल आज नहीं तो
निश्चित कल परंतु मिलता अवश्य है ।
इसीलिए जीवन लक्ष्य बनाये रखिये
और नेक कर्म करते हुए आगे बढ़ते
रहिए सफलता आस लगाये बैठी है... ।
सफलता से पहले तमाम भय
आगे आएंगे
जो कर्मवीर को डरायेंगे
डरना बिल्कुल नहीं
अपने इष्ट का सहारा लेकर
तुम मंजिल पा जाओगे ।
□□□



- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

बाल कविता मेला

चारों ओर मची है धूम ।
सोनू-मोनू चंपक रहे झूम ॥
मेला लगा बड़ा सलोना ।
खूब बिक रही खेल- खिलौना ॥
झूला झूल रहे छोटे बच्चे ।
चमक रहे हरे, नीले- पीले कंचे ॥
मिलजुल कर सबने मेला देखा ।
जोकर का खेल अनोखा ॥
ठंडी- ठंडी आइसक्रीम का लगा ठेला ।
खाने पहुंच गया बच्चों का रेला ॥
बच्चों ने खुशी मनाई भारी ।
तब घर जाने की करी तैयारी ॥
खुशी-खुशी घर सब बच्चे आये ।
मेले के किस्से मम्मी-पापा को सुनाये ॥
□□□

पता : ग्राम रिहावली, पोस्ट तारौली
गूजर, फतेहाबाद, आगरा,
उत्तर प्रदेश 283111
सम्पर्क : 9456994678

पर्यावरण दिवस की सार्थकता



श्रीमती नमिता वैश्य (शिक्षिका)

पर्यावरण हमारे चारों ओर का वह प्राकृतिक आवरण है जो हमें सरलता पूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होता है, पर्यावरण से हमें हर वह संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं जो किसी सजीव प्राणी को जीने के लिए आवश्यक हैं। पर्यावरण ने हमें वायु, जल, खाद्य पदार्थ, अनुकूल वातावरण आदि उपहार स्वरूप भेंट दिया है। हम सभी ने हमेशा से ही पर्यावरण के इन संसाधनों का भरपूर प्रयोग किया है और आज इतना विकास कर पाने में पर्यावरण का एक प्रमुख योगदान रहा है। पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण की वास्तविकता को बनाए रखना होगा। प्रत्येक वर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में लोगों में पर्यावरण स्वच्छता और सुरक्षा के प्रति वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने के लिए मनाया जाता है। इसकी शुरुआत 1972 में 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन से हुई। 5 जून 1973 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। पर्यावरण दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाना है। लोगों को पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैसों के प्रभाव, ग्लोबल वार्मिंग, ब्लैक होल इफेक्ट आदि ज्वलंत मुद्दों और इनसे होने वाली विभिन्न समस्याओं के प्रति जागरूक करना है।

हमारे चारों ओर पृथ्वी पर फैली प्रत्येक वस्तु हमारे पर्यावरण का हिस्सा है। यह मूलतः जैविक और मौलिक तत्वों के पारस्परिक संबंध से बना है। पर्यावरण के मौलिक तत्वों में स्थान, भू-आकृतियाँ, जलाशय, जलवायु, जल-अपवाह, शैल, मृदा, खनिज

संपत्ति आदि सम्मिलित हैं, जबकि जैविक तत्व में मानव, पशु-पक्षी एवं वनस्पतियाँ सम्मिलित हैं। मानव और पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। मानव की अच्छी-बुरी आदतें जैसे वृक्षों को सहेजना, जलवायु प्रदूषण रोकना, स्वच्छता रखना, पानी को दूषित करना, व्यर्थ बर्बाद करना, वृक्षों की अत्यधिक मात्रा में कटाई करना आदि पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मानव को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। हमारे यहां वृक्षों को पूजनीय माना जाता है, लोक पर्वों पर वृक्ष पूजन की परंपरा भी है, इसके बावजूद वनाच्छादित क्षेत्र में कमी यह इंगित करती है कि कहीं ना कहीं हम उन दायित्वों से पीछे हटे हैं जो पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक हैं।

मानव ने हमेशा अपने विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने का प्रयास किया है। इसके लिए विश्व के सभी देश अपनी प्रगति के लिए प्रकृति के संसाधनों का दोहन कर रहे हैं जिसका परिणाम है कि प्रदूषण का स्तर काफी तेजी से बढ़ता जा रहा है। हम अपनी सुविधाओं के लिए आधिकाधिक पेट्रोलियम पदार्थ का उपयोग करते हैं, घर को वातानुकूलित रखने के लिए ए. सी. का उपयोग करते हैं तथा साथ ही कारखानों से निकलने वाले जैविक पदार्थ जो सुविधा के अनुसार कहीं भी छोड़ दिए जाते हैं, प्रदूषण को बढ़ावा देने में अपना योगदान दे रहे हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है। ऐसे में यदि इसे अभी भी कम न किया गया तो मानव सभ्यता को नष्ट होने में अधिक समय नहीं लगेगा। इस प्रदूषण का भयानक परिणाम

यह हो सकता है कि इस पृथ्वी पर जीवन की परिकल्पना करना भी असंभव हो जाएगा।

पर्यावरण असंतुलन एक वैश्विक समस्या के रूप में सामने आ रहा है जिसका प्रभाव मौसम पर सबसे ज्यादा पड़ रहा है। मौसम अपना रूप बदल रहा है, ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है तो ग्लेशियरों के पिघलने से नई तरह की समस्याएं सामने आ रही हैं। पर्यावरण असंतुलन के कारण ही ओजोन परत के क्षीण होने तथा उसमें छेद होने की समस्या भी सामने आई है, यदि यह परत नष्ट हो जाए या कमजोर पड़ जाए तो पराबैंगनी किरणें पृथ्वी की सतह तक पहुंचती हैं जो न सिर्फ जीव-जंतुओं के लिए अपितु वनस्पतियों के लिए भी हानिकारक होती हैं। ओजोन परत क्षरण के लिए भी मानवीय गतिविधियां ही जिम्मेदार हैं। पर्यावरण असंतुलन की वजह से जलवायु परिवर्तन की शुरुआत हो चुकी है। मौसम का चक्र प्रभावित हो रहा है, बेमौसम की बरसात तथा अधिक बर्फबारी इसी का परिणाम है। ठंडे स्थान और अधिक ठंडे हो रहे हैं जबकि गर्म स्थान और गर्म होते जा रहे हैं। बिगड़ता पर्यावरण कुछ और घातक परिणाम भी दे रहा है। जीवों तथा पौधों की अनेक प्रजातियां जहां विलुप्त हो चुकी हैं, वहीं कुछ विलोपन के मुहाने पर हैं। जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव साफ दिख रहा है। चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के बावजूद जानलेवा बीमारियां बढ़ रही हैं। सम्पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलन का शिकार हो गया है। जलवायु परिवर्तन से कृषि भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है। तापमान की वृद्धि के कारण पौधों में नमी का अभाव हो जाता है जिस कारण वे नष्ट होने लगते हैं। कृषि पैदावार में कमी से खाद्यान्न संकट बढ़ा है।

शास्त्रों में कहा गया है कि प्रकृति का कोप सारे कोपों से बढ़कर होता है। यदि हमने इस सूत्र वाक्य पर ध्यान दिया होता तो शायद आपदाओं के रूप में हमें प्रकृति का यह क्रूर और विनाशकारी चेहरा ना देखना पड़ता। यदि हमने संतुलित विकास को प्राथमिकता दी होती तो प्रकृति इस तरह कुपित न होती। प्रकृति और पर्यावरण के प्रति अगर हम अपने दायित्वों की अनदेखी इसी तरह करते रहे तो हमें इसके दुष्परिणामों को झेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए या समय रहते अपने आचरण में बदलाव लाकर पर्यावरण से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाकर विकास

के पद पर आगे बढ़ना चाहिए। यदि अभी भी हम पर्यावरण संतुलन एवं संरक्षण की दिशा में ध्यान देना शुरू कर दें तो भावी विनाश से बच सकते हैं। चूंकि यह एक वैश्विक समस्या है अतएव प्रयास भी वैश्विक स्तर के होने चाहिए।

हमें सबसे पहले ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए प्रयास करने होंगे, इसके लिए विशेष रूप से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना होगा तथा प्रकृति के विनाश से बचाव के लिए अपने दायित्वों को निभाना होगा इस दिशा में कारगर पहल तथा वृक्षारोपण को बढ़ाया जाना होगा। ऐसी तकनीकों का विकास करना होगा जिससे कार्बन का उत्सर्जन कम हो। बायोगैस और सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को भी बढ़ावा देकर इस समस्या से निपटा जा सकता है। पर्यावरण की समस्या से निपटने के लिए हमारा यह दायित्व बनता है कि हम वह आचरण किसी भी कीमत पर न करें, जिससे पर्यावरण का क्षरण या क्षति हो। इसके लिए हमें अपनी जीवन शैली में बदलाव लाना होगा। विलासिता और भोगवादी अभिवृत्तियों पर अंकुश लगाना होगा। भौतिक संसाधनों का धड़ल्ले से प्रयोग रोककर हम काफी हद तक पर्यावरण संतुलन में सहायक बन सकते हैं। कम से कम प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जाए, यदि बहुत आवश्यक हो तो पर्यावरण को होने वाली क्षति की भरपाई की जाए। हमें प्रकृति की ओर लौटकर ही अपना बचाव करना होगा। कुछ छोटे-छोटे प्रयास कर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के कुछ उपाय -

- ❑ वर्षा जल संचयन प्रणाली का उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❑ अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखें यह कदम पर्यावरण को बचाने में सहायक होगा।
- ❑ वायुमंडल में कार्बन की मात्रा को कम करने के लिए सौर ऊर्जा का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
- ❑ प्लास्टिक का उपयोग बिलकुल न करें।
- ❑ आने-जाने के लिए बाइक, स्कूटर या कार का इस्तेमाल करने की बजाय हम साइकिल का प्रयोग करें। सार्वजनिक परिवहन के साधनों का प्रयोग करें।

- ❑ जैविक खाद का उपयोग किया जाना चाहिए।
- ❑ पालिथीन की जगह जूट के बैग या कपड़े से बने हुए बैग का प्रयोग करें।
- ❑ यूज एंड थ्रो की प्रक्रिया को छोड़कर उन पदार्थों का प्रयोग करें जो रीसायकल हो सकते हैं।
- ❑ जल का संतुलित प्रयोग करें तथा व्यर्थ बर्बाद न करें।
- ❑ बिजली से चलने वाले संसाधनों का कम से कम प्रयोग करें तथा इन उपकरणों को बंद रखकर भी पर्यावरण की क्षति कम की जा सकती है।
- ❑ जहां भी संभव हो पेड़ पौधे लगाएं और उनका संरक्षण करें।

इन छोटे-छोटे उपायों को अपनाने के साथ ही यह भी जरूरी है कि हम वृक्षारोपण पर अधिकाधिक ध्यान दें तथा इसके लिए लोगों को प्रेरित भी करें। सिर्फ वृक्षारोपण को प्रोत्साहित ही ना करें बल्कि वनों की कटान, वृक्षों की कटान का पुरजोर विरोध भी करें। वृक्षों को अपनी संतान की तरह प्यार और

परवरिश देकर हमें अपने देश में वृक्ष क्रांति लानी होगी। यदि हर व्यक्ति जीवन में मात्र एक पेड़ लगाने और अपने जीवन काल में उसकी देखभाल का संकल्प ले तो काफी हद तक परिवर्तन हो सकता है। हमारे देश में वृक्षों के पोषण और पल्लवन की एक समृद्ध परंपरा रही है। पर्यावरण दिवस मनाने का उद्देश्य यही है कि हम प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें तथा उतना ही उपयोग करें जितना हमारे लिए आवश्यक है। हम अपने साथ-साथ इस धरती पर रहने वाले सभी जीवों की अस्मिता का आदर करें तथा पर्यावरण को सुरक्षित रखने का प्रयास करें। हमारा दायित्व बनता है कि हम प्रकृति और पर्यावरण में ईश्वर का प्रतिरूप देखकर उसकी उपासना करें। संभवतः प्रकृति का कोप तभी दूर हो सकेगा और हम उन प्राकृतिक आपदाओं से बच सकेंगे जो रह-रहकर हमें झकझोर रही हैं। ❑

पता : मसकनवा, गोण्डा
उ.प्र.-271305
मो.-9997478210

धरती ठहरी

नये धान से फसलें फहरी।
नये मान से धरती ठहरी।।
झूम रहा गेहूं दुल्हन सा,
उड़ी पवन के झोंके लेके।
झर-झर झरना झांक रहा,
गलियारे से आया सावन।
मन हर्षाया है मन भावन,
जल से भरती धरती हरी।
नये मान से धरती ठहरी।।
प्रात जाग रहा है देखो,
कलगी से सूरज आया।

छुप कर अपला से देखें,
अमवा की डारो से कोयल।
सप्त स्वरो से गाये कूकू,
पसरी पीत गंदों से दरी।
नये मान से धरती ठहरी।।
उपलों से आती है खूशबू,
लगे चौरैया मेथी सी दुल्हन।
चित्र खींचता बादल आया,
झूम गगन पवन से नहाया।
प्रेयसी धरे घूंघट का पट,
पनियारे पे भरती गगरी।
नये मान से धरती ठहरी।।

❑❑❑

पता : 356/24, आलम नगर रोड, बाउली चौकी लखनऊ, उ0प्र0-226017

- डॉ अलका अस्थाना 'अमृतमयी'
लखनऊ
सम्पर्क : 8934884441



घर-घर सहकारिता, घर घर सहभागिता

सहकारिता का अजेय रथ आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पृथक सहकारिता मंत्रालय ही गठित करके बड़ा संदेश दिया है। रूस को छोड़कर अन्य किसी भी देश में सहकारिता को मंत्रालय स्तर नहीं प्रदान किया गया। भारत में यह पहले कृषि मंत्रालय के अधीन एक छोटा विभाग मात्र था। यही नहीं, प्रधानमंत्री ने इस मंत्रालय की कमान अपने सर्वाधिक विश्वस्त गृहमंत्री अमित शाह को सौंप कर अपना दृष्टिकोण भी स्पष्ट कर दिया है। सहकारिता को गरीबी और बेरोजगारी के कोढ़ से मुक्ति दिलाने में प्रयोग किया जायेगा। यहां अर्धबेरोजगारी की समस्या सबसे भीषण है। हर घर में अर्धबेरोजगारी जैसी स्थिति सामान्य सी हो गयी है। जो काम मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा है। यदि परिवार में 200 रुपये रोज की आवश्यकता है, तो केवल 100 रुपये का ही काम मिल रहा है। कभी कभी तो वह भी नहीं मिलता।

वरिष्ठ नागरिक बेरोजगारी का शिकार है, जबकि उसके पास अनुभवों की हरी पूरी खान ही उपलब्ध है। उनके अनुभवों का लाभ उठाया जा सकता है। सेवानिवृत्त कर्मचारियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अनुमान है कि वरिष्ठ नागरिकों के कम से कम एक हजार मिलियन कार्य दिवसों की क्षति हो रही है, जो एक देश की क्षमता के बराबर है। इतना ही क्षति अर्धबेरोजगारों से मान ली जाय, तो आंकड़ा दो देशों के बराबर



— सीएमए गोविन्द शुक्ल

पहुंच जायेगा। अर्थात् सभी व्यर्थ कार्यदिवसों की गणना की जाय, तो भारत के बराबर एक दूसरा भारत तैयार हो सकता है। दूसरे शब्दों में, आधा भारत अपनी कार्य क्षमता से विलग है, सुशुप्त है।

इसलिए, सहकारिता के माध्यम से इस गंभीर परिस्थिति का सामना करना चाहिए। अर्धबेरोजगारी को समाप्त करने के लिये सहकारिता अपनाना होगा। घर घर सहकारिता, घर घर सहभागिता की परिकल्पना को साकार करना पड़ेगा। घर के सभी सदस्यों को सहकारिता का महत्व और

उसकी अनिवार्यता से परिचय कराना सभी के हित में है।

उत्तर प्रदेश में सहकारिता की प्रगति आशा के अनुकूल नहीं है, क्योंकि सहकारी संरचना की

गति अत्यंत धीमी है। और इसे यहां जन आंदोलन नहीं बनाया जा सका है। मुख्यमंत्री इस ओर ध्यान दे रहे हैं, लेकिन अभी समय लगेगा। सहकारिता की तकनीक में गति का महत्व है, जिसे बनाये रखना आवश्यक है। फिर भी, यह कहना अनुचित न होगा कि उत्तर प्रदेश में सहकारी संस्थाओं की प्रगति की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। केंद्र सरकार परम सहयोग की मुद्रा में है ही, ऐसे में उत्तर प्रदेश के लिये अवसर उपलब्ध है। इसका सदुपयोग किया जा सकता है। जनता की भूमिका सब कुछ तय करेगी। केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त न होंगे। बार बार सरकार और सहकार की बात होती है। परन्तु परिणामी प्रभाव प्रगट नहीं होता। तो सहकारिता के लिये भी सहकारिता

का प्रयोग होना चाहिए। सहकारिता का तात्पर्य सहकार यानी सहभाग हो सकता है। सहभाग अति आवश्यक है। यदि सहभाग न रहे, तो समाज का आधार ही विलुप्त हो जायेगा। सहभाग ही समाज की परम्परा है, इसे

सम्हालने का कार्य सहकारिता निभा सकती है। दूसरे शब्दों में, सहकारिता के सिद्धांत समाज को संगठित कर सकते हैं। और यह प्राकृतिक नियमों के अनुकूल भी है, प्रतिकूल कतई नहीं। इस भ्रम को मिटाना होगा, कि सहकारिता से कोई प्रतिकूल प्रतिक्रिया आयेगी। अच्छी भावना से किया गया कोई कार्य अवश्य ही सफल होगा। पहले से ही नकारात्मक भाव नहीं रखना चाहिए, यह हानिकारक सिद्ध हो सकता है। सबसे उचित दिशा में चलना ही प्रकृति का आदेश है। दिशा और दशा को विचारवान लोग भलीभांति समझ लेते हैं। इसलिए सहकारिता

का मंत्र अचूक है। इस पर समाज के अग्रणी जनों का निर्णय होना चाहिए।

स्वतंत्रता के बाद इतने वर्षों तक सहकारिता केवल करवटें बदलती रही, किसी ने इतना सहारा भी नहीं दिया, वह खड़ी हो सकती। सहकारिता केवल बैशाखियों पर चल रही है। वह अपने बल पर खड़ी भी नहीं हो सकती है, चलना फिरना दूर की बात है। इतनी लाचार या कमजोर अवस्था में सहकारिता को ढोने के लिये कितने ही प्रयास किये गये होंगे, लेकिन कोई विशेष लाभ हुआ प्रतीत नहीं होता। इसका क्या कारण है, इस पर सम्यक विचार होना चाहिए। भ्रष्टाचार ने इसे खोखला तो किया ही है, जनता की उदासीनता ने इसे डुबो रखा है।

नौकरशाहों के लिये सहकारी संस्थायें चारागाह बन गयी हैं। अधिकारी यहां नोच खसोट कर अपना उल्लू सीधा करते हैं। उत्तर प्रदेश की सहकारी चीनी मिलों का हाल तो समाचारपत्रों में नित्य उजागर होता रहति है, लेकिन यहां सहकारी बैंकों की हेराफेरी भी चर्चित रही। सहकारी

साख समितियों की साख पर बट्टा लगा है। सबसे अधिक भ्रष्टाचार के आरोप सहकारी संस्थाओं पर लगे, जो उसके पतन का कारण बनीं।

सहकारिता को घर घर से न जोड़ पाने के कारण यह जनता में लोकप्रिय नहीं हो सकी। बल्कि इसे जनता से दूर रखने के कारण अलोकप्रिय सिद्ध हुयी। सहकारिता के पतन की कहानी अति रोचक है। यही, कि जो लोग सहकारिता की रोटी खा रहे थे, वे ही इसके शत्रु साबित हुये। सहकारिता माने स्वार्थपरिता, ऐसा जुमला बोला जाता रहा। अफसरशाही से निकाल कर इसे लेबर चौराहों तक पहुंचाया गया



होता, तो निश्चय ही अच्छे परिणाम होते। सहकारिता को महलों में कैद कर लिया गया, और इसे घरों तक नहीं पहुंचने दिया गया। घर घर में सहकारिता की ज्योति जलनी चाहिए, आंगन में तुलसी के साथ सहकारिता का भी प्रतीक चिह्न हो। हर दरवाजे पर सहकारिता की तुलसी माला उपलब्ध रहेगी, तो शुभ लाभ रहेगा। तो, इसे जन जन तक प्रचारित प्रसारित करने की योजना बनायी जाय। योजना बनाया गयी थी, लेकिन 'दिनभर चला अढ़ाई कोस' वाली कहावत चरितार्थ हो गयी। सहकारिता की गति इतना धीमी रही कि पुराने जमाने की बैलगाड़ी भी आगे निकल जाय, अर्थात् बिल्कुल भैंसागाड़ी की रफ्तार से प्रगति बतायी गयी। यह मजाक का विषय नहीं, लज्जा का विषय है। अन्य सेक्टर के सापेक्ष सहकारिता सेक्टर सबसे निचले पावदान पर है, जो निराशाजनक कहा जायेगा।

एक और लोकोक्ति याद आती है-जहं जहं चरन पड़े संतन के, तंह तहं बंटाधार। सहकारिता ने जिस जिस क्षेत्रमें प्रयोग किये, वहां घाटा ही घाटा हुआ। चीनी मिलें, हथकरघा, कताई मिलें, यूपिका, हैण्डलूम, आदि अनेक उदाहरण मिल जायेंगे जो सहकारिता की असफलता की गाथा सुना रहे हैं। जिला कोआपरेटिव यूनियन का अस्तित्व संकट में पड़ा, उत्पादकता आधारित औद्योगिक अवस्थान भी कहीं कहीं संकटग्रस्त हुये। भूमि विकास संस्थायें अनियमितताओं की शिकार हुयीं। प्रायः ग्रामोद्योग जैसी स्थित हो गयी। लोगों का विश्वास हासिल नहीं हुआ, जनता का मन नहीं भरा। सहकारिता को नेतागिरी के जाल में भी फंसाया गया। भाषणों में, लेखों में इसके गुणगान किये गये। परन्तु व्यवहार में इसका दोहन किया गया। इसके माध्यम से व्यक्तिगत लाभ के रास्ते तलाशे गये। सदुपयोग की जगह दुरुपयोग किया गया। सहकारिता को नाकारिता में बदला गया। गुण के स्थान पर अवगुण ने अधिकार जमा लिया। तात्पर्य यह है कि इसमें व्याप्त बुराइयों का सिलसिला रूकना चाहिए। अन्यथा सहकारिता का नाम लेना भी भारी पड़ेगा। इसको

सीमित दायरे से निकाल कर जन आंदोलन में परिवर्तित करना पड़ेगा। इसलिए घर घर इसका संदेश पहुंचाया जाय।

सहकारिता एक सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम है, जिसकी मौलिक भावना ही गांवों तक पहुंचाना है। मोहल्ला समितियों के रूपमें इसका योगदान विकास कार्यों हेतु विशेष हो सकता है। पंजीकृत संस्था की तरह इसकी मान्यता हर क्षेत्र में सुलभ हो। शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास की अनेक योजनाओं को लागू करने में सहकारिता का बड़ी भूमिका होगी। फिरभी, सरकारी प्रयास अनिवार्य है। सरकार की इच्छाशक्ति पर निर्भर होगा कि सहकारिता जन आंदोलन बन सके। क्योंकि इसके प्रचार प्रसार का कार्य अत्यंत विस्तृत है। घर घर प्रचार समग्री पहुंचाना कठिन कार्य है। इसमें सभी विभागों का सहयोग वांछित होगा।

सहकारिता को शिक्षा का अंग बनाया जा सके तो बच्चों में इसके प्रति रुझान उत्पन्न होगा। प्रौढ़ शिक्षा के पाठ्यक्रम में इसे लाया जा सकता है। सतत् शिक्षा की प्रबल धारा ही निकल सकती है। मैं स्वयं भी 'सहकारिता आंदोलन' नाम से स्वयंसेवी कार्यक्रम संचालित करता हूं, जिसमें जनसंपर्क के माध्यम से सहकारिता के उद्देश्यों को बताया जाता है, इसके लाभों से लोगों को समझाया जाता है। इसी तरह समाज में जागरूकता का मिशन सफल हो सकता है, बशर्ते सभी को बराबर रुचि लेनी पड़ेगी। स्त्री पुरुष, बच्चे, वृद्ध, युवा सभी सहकारिता के निश्चित लक्ष्य को पाने में संलग्न हो सकते हैं, एकजुटता की भावना के साथ इससे जुड़ सकते हैं। यह बहुत ही अच्छा और देशहित का कार्य है। सहकारिता को समाज में स्थापित करने का विचार इस राष्ट्र की प्राथमिकता है। ●

(लेखक कास्ट एकाउंटेंट और वीएसएसडी कालेज, कानपुर के शोधछात्र हैं।)

पता : 1/53, विनयखण्ड गोमतीनगर,
लखनऊ-226010

भारतीय राजनीति में नेतृत्व का संकट

- बृजपाल

दीप नारायण सिंह सहकारी प्रबंध संस्थान,
शास्त्री नगर, पटना-23

पंचायतों, स्थानीय निकायों, खण्ड विकास कार्यालयों, सहकारी संस्थाओं और राज्य की विधायिकाओं व केन्द्र में संसद के दोनों सदनों से सम्बद्ध 40 लाख लोग नेतृत्व दे रहे हैं। दुनिया के किसी भी लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के देश इतनी बड़ी संख्या में नेतृत्व में संलिप्त लोग नहीं हैं। इन संस्थाओं का निर्वाचित जन-प्रतिनिधियों से दिशानिर्देशन व नीतियों का निरूपण किया जाता है। विश्व के किसी अन्य देश में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का विकेन्द्रीकरण इस तरह नहीं है परन्तु लोकतांत्रिक दर्शन का वास्तविक स्वरूप आकार नहीं ले सका है।

धार्मिक विषमता, राजनीतिक दलों में परस्पर विद्वेष, सामाजिक विषमता, निहितस्वार्थ, सामाजिक वर्चस्व, व्यक्तिगत महात्वाकांक्षा और आने वाली पीढ़ियों की भविष्य की सुरक्षा के लिए धन संग्रह और राजनीतिक वर्चस्व और आर्थिक असमानता के घटकों ने लोकतंत्र के वास्तविक चरित्र को निरर्थक बना दिया है। वर्ष 1776 में संयुक्त राज्य अमेरिका में लोकतंत्र की स्थापना हुई। जार्ज डब्ल्यू वाशिंगटन 1789 से 1797 दो कार्यकाल में राष्ट्रपति रहे थे। उन्होंने दूसरा कार्यकाल पूरा कर के चुनाव लड़ने से इन्कार कर दिया था।

भारतीय परिवेश में बहुदलीय लोकतंत्र है। जिसमें भारत निर्वाचन आयोग के 15 मई 2023 के नवीनतम प्रकाशनों और उसके बाद की अधिसूचनाओं के अनुसार 6 राष्ट्रीय पार्टियाँ, 57 राज्य पार्टियाँ और 2597 गैर-मान्यता प्राप्त पार्टियाँ हैं। पुरातन धार्मिक सांस्कृतिक और राजशाही, तानाशाही व सामंती संस्कृति के अवशेषों का लोगों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव और नवीनतम विज्ञान व टेक्नॉलाजी की उपलब्धियों में संक्रमित होती संस्कृति के सामाजिक अवस्था में है। लोकतांत्रिक दर्शन की संस्कृति में

अवरोध उत्पन्न करने की भी सामाजिक अवस्था है। वर्ष 2019 में बीते चुनाव में 89 प्रतिशत प्रत्याशी (सांसद) करोड़ पति हुए थे। 37 प्रतिशत प्रत्याशी गम्भीर अपराधों के आरोपी थे। भारतीय लोकतंत्र स्वरूप इन परिस्थितियों में नीति निर्धारण या उसके क्रियान्वयन की दशा और दिशा अपने मूल उद्देश्य से भटक गई है जिसके कारण आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति का प्राकृतिक संसाधनों में नैसर्गिक रूप से अंश है और इन संसाधनों के शोषण से उपलब्ध सेवाओं व उत्पादों में प्रत्येक व्यक्ति का अंश है। ऐसे प्रतिफल में भागीदारी और आवश्यकताओं की आपूर्ति लोकतंत्र की स्वाभाविक मर्यादा है।

भारतीय परिवेश में अप्रत्यक्ष लोकतंत्र के वास्तविक दर्शन को आत्मसात नहीं कर सके हैं। मतदाताओं का एक वर्ग अपने मतों के उपयोग करने से वंचित रहता है। गरीबी, सार्थक, शिक्षा का अभाव निरंतर सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि से लोगों के रहन-सहन में गिरावट से आर्थिक समृद्धि व आर्थिक विकास का उद्देश्य कल्याणकारी अर्थव्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगा देता है।

लोकतंत्र सरकार के उस स्वरूप से संबंधित है जिसमें लोगों की शक्ति का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग किया जाता है। इस संबंध में "प्रत्यक्ष लोकतंत्र" सरकार का वह रूप है जहाँ लोग बिना किसी प्रतिनिधि के विभिन्न नीतियों पर निर्णय लेते हैं। लोगों के पास शक्ति और निर्णय लेने का अधिकार है। लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में संघात्मक गठन में दो स्तर पर लोकतांत्रिक शासन प्रणाली

होता है। एकात्मक संगठनात्मक ढाँचों में एक सरकार होती है।

एक राजनीतिक दल के निर्वाचित सदस्यों का दूसरे राजनीतिक दल में प्रवेश से उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न करके दूसरे राजनीतिक दल की सरकार गठित करने के प्रश्न उठते रहे हैं। निर्वाचित लोकतंत्र की मर्यादा अल्पप्रत्याशित होती राजनीतिक शास्त्र आँकड़ों का खेल बन जाता है।

जब लोग शासन प्रणाली स्थापित या सरकार बनाने के लिए प्रतिनिधि या प्रत्याशी को अपने मत का प्रयोग करते या चुनने के विकल्प के अधिकार का उपयोग करते हैं इस प्रकार कला और विज्ञान को अप्रत्यक्ष लोकतंत्र कहते हैं। राजनीतिक दल **Special Purpose Vehicle** के रूप में होते हैं। जनसंख्या के अनुपात में चुने प्रतिनिधियों के समूह को संसद कहते हैं। एक दलीय लोकतांत्रिक प्रणाली वाले देश एक ही दल के लोगों के प्रत्याशियों को मत देने का अधिकार होता है। रूस में डूमा चीन में पौलित ब्यूरो होते हैं।

स्वीटजरलैंड में प्रत्यक्ष लोकतंत्र है और कुछ विषयों पर सीधे जनमत कराया जाता है। अपने मत को वापस लेने का अधिकार जनता के पास रहता है। किसी भी विषय पर जनमत संग्रह कराया जा सकता है। कुछ पदों पर कार्यकाल की अवधि को भी सीमित किया गया है।

भारतीय परिवेश के चुनाव में मतदाता को अपने संसद के प्रत्याशी को चिन्ह पर अपने मत को अभिलिखित करने का मौलिक अधिकार है। इसके बीच टेक्नालॉजी का हस्तक्षेप अवैधानिक है। यह प्रश्न समय-समय पर आता रहा है। हमारे देश से बेहतर टेक्नालॉजी वाले देशों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी जैसे देशों में मतदाता, मतदान पर अपने प्रत्याशी के चिन्ह पर अपने मत को अभिलिखित करने के बीच

टेक्नालॉजी के हस्तक्षेप को हटा दिया है। भारत जैसे देश में परिस्थितिजन घटनाओं के परिपेक्ष्य में मतदाता को अपने प्रत्याशी के चिन्ह पर मत अभिलिखित करने में टेक्नालॉजी का हस्तक्षेप अवांछित है।

बहु-दलीय लोकतांत्रिक प्रणाली के देशों में सत्ता में होने पर कोई राजनीतिक दल अपने समकक्ष राजनीतिकदल को छल, कपट व अन्याय से पीड़ित करके उन्हें कमजोर बना कर अस्तित्वहीन करता है। ऐसा व्यवहार लोकतांत्रिक व्यवहार नहीं होता है। लोकतंत्र में लोगों की निष्ठा, जनता की लोकतांत्रिक प्रणाली में विश्वास और लोगों की स्व-शासन करने की इच्छा के अतिरिक्त लोगों की लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए परिपक्वता जैसे घटक लोकतंत्र को जीवंत रखते हैं। लोकतंत्र के लिए नागरिक संस्कृति व सभ्यता का निरंतर विकास निरंतर प्रक्रिया है।

लोकतांत्रिक शासनप्रणाली के देशों में कानून व व्यवस्था के लिए पुलिस, प्रवर्तन निदेशालय की भूमिका को इनकार नहीं किया जा सकता है। इन संस्थाओं की निष्पक्षता, विश्वसनियता और सत्यनिष्ठा के लिए इनका स्वयातशासी होना आवश्यक है। जिससे सत्ता में राजनीतिक दल इन संस्थाओं के दुरुपयोग से बहु-दलीय लोकतंत्र को एक राजनीतिक दलका एकाधिकारी व तानाशाही में न बदल सके।

प्रजातांत्रिक गणराज्य व्यवस्था के परिवेश में सामाजिक संरचना का विवेकीकरण और ऐसी आर्थिक नीतियों का निरूपण जिनके क्रियान्वयन से निचले स्तर पर 60 प्रतिशत जनसंख्या के रहन-सहन के स्तर में वृद्धि हो सके। आज भारतीय राजनीति के परिवेश में नेतृत्व के विकास ने नयी सभ्यता और संस्कृति आवश्यक है।

पता : सलेमपुर पतौरा,
थाना पारा,
लखनऊ-226101



- उमेश शुक्ल
(विद्यावाचस्पति)

‘आइये-आइये नमस्कार’

आइये-आइये नमस्कार ।
आप! महीने में चौथी बार ॥
कैसा है ये चमत्कार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

पहले पांच साल में एक बार ।
मौका मिलने पर कभी-कभार ॥
कैसे उमड़ा अचानक प्यार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

नजर चुराते थे हर बार ।
पास न आते थे सरकार ॥
हमसे मिलना था बेकार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

क्या? घर पर है कोई बीमार ।
पैसों की है या दरकार ॥
आया कैसे सु-विचार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

साथ में चलना है बाजार ।
या फिर पढ़ना है अखबार ॥
कैसे आये हमारे द्वार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

आपका अपना था संसार ।
हमारी उसमें क्या दरकार ॥
हम तो लगते थे बेकार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

सेवा तो बतलाए सरकार ।
पड्डू पाँवड़े बारम्बार ॥
न्योँछावर कर दूँ घर-बार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

प्रभु के पीछे बड़ी कतार ।
गाड़ी-जीपों की भरमार ॥
साथ खड़े थे चमचे चार ।
आइये-आइये नमस्कार ॥

डाल गले में ढेरों हार ।
खींस निपोरें बारम्बार ॥
सबसे करते राम-जुहार ।
आइये आइये नमस्कार ॥

निर्वाचन का रहा बुखार ।
जिससे बदला था व्यवहार ॥
हाथ जोड़ कर रहे प्रचार ।
आइये आइये नमस्कार ॥

एफ-4358 राजाजी पुरम, लखनऊ-226017, मो.-9616135035

‘सहकारिता’

पत्रिका के नियम

1. सहकारिता मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन हर महीने के तीसरे सप्ताह में होता है।
2. सहकारिता का उद्देश्य सहकारिता तथा विकास सम्बन्धी योजनाओं और समाचारों का प्रचार करना, सहकारिता के उद्देश्य और उपयोग से जनता को परिचित कराना तथा देश की आर्थिक समृद्धि के लिये प्रेरित करना है।
3. इसका वार्षिक मूल्य ₹0 150.00 तथा आजीवन सदस्यता के लिए ₹0 1500.00 मात्र है।
4. प्रकाशन, विज्ञापन, ग्राहक और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र-व्यवहार सम्पादक सहकारिता पो.बा. नं. 136 लखनऊ से करना चाहिए।
5. सहकारिता में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट किये गये विचारों से पूर्णतः अथवा अंशतः सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
6. सहकारिता पत्रिका के न मिलने की सूचना सम्पादक को मास के भीतर मिलनी चाहिए अन्यथा दूसरी प्रति भेजना सम्भव न होगा।
7. सहकारिता में प्रकाशनार्थ सामग्री-लेख समाचार आदि कागज में एक ही ओर लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

सम्पादक

सहकारिता

पोस्ट बाक्स नं0 136

लखनऊ-226001

‘सहकारिता’ पत्रिका हेतु विज्ञापन की दरें

1-doj i jk IK'B	: 0 15]00000
2-fof k'V foKki u	: 0 10]00000
¼k/Zi sj ij ½	
3I kKj. k i jk IK'B	: 0 5]00000
4-v k/k IK'B	: 0 3]00000
5-pkKkZIK'B	: 0 150000

‘सहकारिता’ साप्ताहिक एवं मासिक का शुल्क

<input type="checkbox"/> एक प्रति-सहकारिता साप्ताहिक	₹0	3.00
<input type="checkbox"/> एक प्रति-सहकारिता मासिक	₹0	15.00
<input type="checkbox"/> वार्षिक-सहकारिता साप्ताहिक	₹0	150.00
<input type="checkbox"/> वार्षिक-सहकारिता मासिक	₹0	150.00
<input type="checkbox"/> सहकारिता साप्ताहिक (आजीवन)	₹0	1500.00
<input type="checkbox"/> सहकारिता मासिक (आजीवन)	₹0	1500.00
<input type="checkbox"/> साप्ताहिक एवं मासिक संयुक्त (आजीवन)	₹0	3000.00

प्रबन्ध निदेशक, यू.पी. को आपरेटिव यूनियन लि0
14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ के
पते पर शीघ्र मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनें।

वी0पी भेजने का नियम नहीं है।

कृपया पत्र- व्यवहार निम्न पते पर करें:-

सम्पादक

सहकारिता

यू.पी. कोआपरेटिव यूनियन लि0

14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग,

लखनऊ-226 001.

सहकारिता के सिद्धान्त



स्वैच्छिक और
खुली सदस्यता

प्रजातांत्रिक
सदस्य-नियंत्रण

सदस्य की आर्थिक
भागीदारी

शिक्षा प्रशिक्षण
और सूचना

स्वायत्तता और
स्वतंत्रता

सहकारी समितियों
में परस्पर सहयोग

सामाजिक
कर्तव्य बोध